(मासिक)

ज्ञानामृत

वर्ष 50, अंक 5, नवम्बर, 2014

मूल्य 8.50 रुपये
वार्षिक शुल्क 100 रुपये

1

2

3

4

5

1.राजकोट- कर्नाटक के राज्यपाल महामहिम वजुभाई वाला का शॉल ओढ़ाकर सम्मान करते हुए ब्र.कु.भारती बहन।
2.नरौरा (कासगंज)- राजस्थान के राज्यपाल महामहिम भ्राता कल्याण सिंह को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.रागिनी बहन।
3.हसनपुर- हरियाणा के मुख्यमंत्री भ्राता भूपेन्द्र सिंह हुड्डा को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.इन्द्रा बहन।
4.सुन्नी (शिमला)- दशहरे मेले में आयोजित आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी अवलोकन के बाद हिमाचल के मुख्यमंत्री राजा वीरभद्र सिंह ब्र.कु.भाई-बहनों के साथ।
5.सासाराम- बिहार के स्वास्थ्य मंत्री भ्राता रामधनी सिंह को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.बबीता बहन।

6

7

8

9

10

6.गायघाट (पटना)- बिहार विधानसभा प्रतिपक्ष नेता भ्राता नंदकिशोर यादव जी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.रानी बहन।
7.अंबिकापुर- छत्तीसगढ़ के गृहमंत्री भ्राता राम सेवक पैकरा को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.विद्या बहन।
8.होशियारपुर- पंजाब के वित्तमंत्री भ्राता परमिंदर सिंह ढींढसा को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.राजकुमारी बहन।
9.लुधियाना- 'सात अरब सत्कर्मों की महायोजना' के उद्घाटन के बाद मंच पर उपस्थित हैं सांसद भ्राता रवनीत सिंह बिट्टू, योजना आयोग, पंजाब के उपाध्यक्ष भ्राता राजेन्द्र भण्डारी, कमाण्डेंट भ्राता कुन्दन लाल, ब्र.कु.राज बहन, ब्र.कु.सरस्वती बहन तथा ब्र.कु.रामप्रकाश भाई।
10.अमलापुरम- 'सात अरब सत्कर्मों की महायोजना' का उद्घाटन करते हुए आंध्र प्रदेश के उप मुख्यमंत्री भ्राता निम्माकयाला चिनाराजप्पा, पूर्व स्वास्थ्य मंत्री भ्राता एम. सत्यनारायण, ब्र.कु.रामप्रकाश भाई, ब्र.कु.श्रीदेवी बहन, विधायक भ्राता ए.आनंदराव तथा अन्य।

संजय की कलम से ..

समाज सेवा

संसार में सभी प्रकार के सेवा कार्यों के पीछे भाव दुखियों को सुखी बनाने का है। सेवा करने से मनुष्य में नम्रता, उदारता, त्याग, कार्य कुशलता, सहयोग इत्यादि कई गुणों का विकास होता है जिनसे उसे उच्च कर्त्तव्य का श्रेष्ठ फल मिलता है। इसलिए कहा गया है कि 'सेवा बिना मेवा नहीं।' अध्यात्म में विश्वास न रखने वाले भी बहुत-से लोग समाज सेवा में लग जाते हैं। वे बालकों तथा बालिकाओं की शिक्षा, महिलाओं के जीवनोत्थान, पतित स्त्रियों के कल्याण-कार्य, दलित एवं पिछड़े वर्गों की उन्नति से सम्बन्धित कार्य, अपठितों के लिए पठन-पाठन के साधन जुटाने तथा भूखों-नंगों और बाढ़ पीड़ित लोगों को राहत पहुँचाने में लग जाते हैं।

परन्तु परमात्मा कहते हैं कि आज करोड़ों लोग स्वयं को ही नहीं जानते और उन्हें परमपिता परमात्मा का भी ज्ञान नहीं है। अत: ऐसे अपठितों को पहले जीवन के मूल्यों का ज्ञान देना, मनुष्यता का पाठ पढ़ाना, अच्छी आदतें सिखाना ज़रूरी है। 'अक्षर' शब्द का अर्थ है जो विनाश न हो। अत: वर्णमाला के अक्षरों के ज्ञान से भी पहले तो मनुष्य को 'नाश' न होने वाली, (अक्षर) आत्मा का तथा परमात्मा का ज्ञान ज़रूरी है तथा आत्मा और परमात्मा के बीच प्रेम के ढाई अक्षर पढ़ना भी आवश्यक है। हाँ, भाषा के अक्षर पढ़ना भी ज़रूरी है परन्तु एक अच्छा नागरिक अथवा एक अच्छा मनुष्य बनने की विद्या पढ़ना उससे भी ज्यादा ज़रूरी है वर्ना पढ़-लिखकर भी यदि मनुष्य धोखेबाज, रिश्वतखोर, स्मगलर, जमाखोर तथा काम वासना द्वारा दूसरों को पतित बनाने वाला और जन-संख्या में अतिवृद्धि करने वाला हो तो वह समाज के लिए अभिशाप ही है।

अत: समाज के लिये सबसे बड़ी सेवा मनुष्य को ईश्वरीय शिक्षा द्वारा नैतिकता का एवं आध्यात्मिकता का पाठ पढ़ाना है। काम क्रोधादि विकार से कोढ़ी बनी आत्मा के कुष्ठ रोग को दूर करने की सेवा करना है। मन में विकारों की बाढ़ से पीड़ित, क्रोध के भूचाल से दुखित आत्मा को राहत पहुँचाना एक महान समाज सेवा है जिससे कि समाज की सभी समस्याओं का समूल अन्त हो जाता है। आपदा आने पर लोगों को वस्त्र, अन्न, औषधि तो देनी ही चाहिए परन्तु इस दुख-ग्रस्त संसार के ढांचे को ठीक करने के लिए, मनुष्य मात्र को सदाचार एवं सात्विकता का पाठ पढ़ाने रूपी समाज सेवा से लाभान्वित करना आवश्यक है। ❖

अमृत-सूची

- राजयोग का प्रयोग *(सम्पादकीय)*..... 4
- प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के .6
- 'पत्र' संपादक के नाम 8
- ईश्वरीय कारोबार में.....9
- सार्वभौमिक बंधुत्व का 12
- बाबा ने बनाया आयुष्वान 14
- विनाश छोड़.....15
- भगवान की पनाह में.....17
- मुझे ज्ञानामृत मिल गई 18
- वरदान बन गये वे शब्द.....19
- जीवन की दिशा बदल गई ...20
- 'मैं' क्या हूँ *(कविता)* 21
- पति का परिवर्तन.....22
- परमात्म प्रेम में विश्वास 23
- कहीं हम परवश तो नहीं? ...24
- आवश्यकता है 25
- खुदा मुझ पर फिदा.....26
- नारी का सम्मान *(कविता)* 27
- बच्चों की दुनिया 28
- सफलता का मंत्र.....31
- सचित्र सेवा समाचार 32
- पानी की सीख 34

सदस्यता शुल्क

	वार्षिक	आजीवन
भारत		
ज्ञानामृत	100 /-	2,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	100/-	2,000/-
विदेश		
ज्ञानामृत	1,000 /-	10,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	1,000/-	10,000/-

शुल्क केवल '**ज्ञानामृत**' अथवा '**द वर्ल्ड रिन्युअल**' के नाम से ड्राफ्ट या मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- संपादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन- 307510 (आबू रोड) राजस्थान।**

शुल्क के लिए सम्पर्क करें - 09414006904, 09414423949
hindigyanamrit@gmail.com

1. **हाथरस-** सर्वधर्म सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए उत्तर प्रदेश के ऊर्जा मंत्री भाता रामवीर उपाध्याय, ब्लॉक प्रमुख भाता रामेश्वर उपाध्याय, ब्र.कु.कविता बहन, ब्र.कु.सीता बहन तथा अन्य।
2. **अमरेली-** सेवाकेन्द्र के भूमि शुद्धिकरण समारोह में मंचासीन हैं ब्र.कु.सरला बहन, ब्र.कु.गीता बहन, सांसद नारन भाई काछडिया तथा विधायक भाता परेश धनानी।
3. **ग्वालियर-** अखिल भारतीय कृषि मेले में आयोजित 'शाश्वत यौगिक खेती' प्रदर्शनी का अवलोकन करने के बाद कुलपति प्रो. डॉ.ए.के.सिंह को ईश्वरीय साहित्य भेंट करते हुए ब्र.कु.चेतना बहन।
4. **जम्मू-** बी.एस.एफ.मुख्यालय में तनाव प्रबन्धन कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.सुदर्शन बहन, बी.एस.एफ.के आई.जी.भाता राकेश शर्मा, ब्र.कु.अशोक गाबा तथा अन्य।
5. **दतिया-** मध्यप्रदेश के स्वास्थ्य मंत्री डॉ. नरोत्तम मिश्रा तथा जिलाधीश भाता प्रकाश जागडे, ब्र.कु.दीपा बहन को सम्मान पत्र भेंट करते हुए।

6. **पडरौना (कुशीनगर)-** विश्व महापरिवर्तन आध्यात्मिक मेले के कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए उत्तर प्रदेश के कैबिनेट मंत्री भाता ब्रह्मशंकर त्रिपाठी, ब्र.कु.मीरा बहन तथा ब्र.कु.भारती बहन।
7. **राजनांदगांव-** चैतन्य देवी की झांकी का उद्घाटन करते हुए सांसद भाता अभिषेक सिंह, ब्र.कु.पुष्पा बहन, ब्र.कु.रोहित भाई तथा अन्य।
8. **कोच्चि-** ब्र.कु.राधा बहन को 'राष्ट्र सेविका अवार्ड' देते हुए केरल के प्रमुख संचेतक भाता पी.सी.जॉर्ज।
9. **मैसूर-** विश्व के सबसे बड़े डेल्टा डायमंड काइट को वर्ल्ड अमेजिंग रेकॉर्ड्स् में शामिल किये जाने का प्रमाणपत्र ब्र.कु.लक्ष्मी बहन तथा ब्र.कु.दीपक को प्रदान करते हुए वर्ल्ड अमेजिंग रेकॉर्ड्स् के अध्यक्ष भाता पवन सोलंकी।
10. **दिल्ली (बवाना)-** नेपाल के सिंचाई मंत्री भाता नारायण प्रकाश सउद को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.चन्द्रिका बहन।

RNI No.10563/1965, Postal Regd. No.RJ/SRO/9559/2012-2014 Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment No. RJ/WR/WPP/002/2013-2014. Published on 25th of each Month &
Posted on 1st to 6th of each month. Price 1 copy Rs. 8.50, Issue : November, 2014.

1.शान्तिवन (आबू रोड)- स्मार्क विंग द्वारा आयोजित सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए मध्यप्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष भाता अरुण यादव, राजयोगिनी दादी रत्नमोहिनी, ब्र.कु.मोहिनी बहन, नैनो टेक्नॉलोजी रिसर्च सेंटर एस.आई.सी.एस.कॉलेज के निदेशक डॉ.महेश्वर सेरन, डी.आर.डी.ओ.दिल्ली के वैज्ञानिक भाता सुशील चंद्रा, ब्र.कु.रमेश शाह तथा ब्र.कु.मुन्नी बहन।

2.हैदराबाद (शान्ति सरोवर)- भारत के पूर्व राष्ट्रपति भाता ए.पी.जे.अब्दुल कलाम को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.कुलदीप बहन।

3.काठमाण्डू (नेपाल)- चैतन्य नवदुर्गा झांकी का उद्घाटन करते हुए नेपाल के उपप्रधानमंत्री भाता प्रकाश मानसिंह तथा ब्र.कु.राज बहन।

4.कोटा- कोटा ओपन यूनिवर्सिटी के कुलपति डॉ.विनय पाठक को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.मृत्युंजय भाई।

5.भुवनेश्वर- उड़ीसा के मुख्यमंत्री भाता नवीन पटनायक को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.लीना बहन। साथ में विराजमान हैं उड़ीसा के राज्यपाल महामहिम डॉ.एस.सी जमीर।

6.चंडीगढ़- 'सात अरब सत्कर्मों की महायोजना' का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.अचल बहन, सांसद किरण खेर, अभिनेता भाता मेहर मित्तल, पंजाब-हरियाणा उच्च न्यायालय के न्यायाधीश भाता अरुण पल्ली, ब्र.कु.अमीरचंद भाई तथा ब्र.कु.रामप्रकाश भाई।

राजयोग का प्रयोग

किसी ने बहुत सुन्दर कहा है कि जीवन हमेशा सीखने के लिए होता है। विद्यार्थी जीवन में हम जो कुछ सीखते और पढ़ते हैं उसका सीमित दायरा होता है। अधिकतर, निर्धारित पाठ्य पुस्तकों से सवाल आते हैं और उन को याद करने के लिए साल भर का समय मिलता है परन्तु विद्यार्थी जीवन पूरा हो जाने के बाद जब हम अपने जीवन की बागडोर स्वयं सम्भालने लगते हैं तब भी परीक्षाएँ आती हैं। अन्तर यह है कि अब अपठित, अनजानी परीक्षाएँ भी आनी शुरू हो जाती हैं।

राजयोग एक वैज्ञानिक विधि

यह आश्चर्यजनक सत्य है कि कई बार बहुत पढ़ा-लिखा मेधावी व्यक्ति भी जीवन की परीक्षाओं में फ़ेल हो जाता है और कई बार कम पढ़ा-लिखा, कम बुद्धिमान भी जीवन की परीक्षाओं को हंसते-हंसते पार कर लेता है। कारण यही है कि अब बौद्धिक बल से अधिक मनोबल और आध्यात्मिक बल की ज़रूरत पड़ती है। इस बल को एकत्रित करने का साधन है आध्यात्मिक ज्ञान। आध्यात्मिक ज्ञान का एक महत्वपूर्ण विषय है राजयोग। राजयोग का अर्थ है ऐसा योग जो हमें अपने मन का, अपनी इन्द्रियों का मालिक बनाए और हर परिस्थिति में अचल-अडोल रहने की शक्ति प्रदान करे। जैसे एक वैज्ञानिक किसी भी नई शोध पर प्रयोग करके उसकी सत्यता और उपयोगिता को देखता है इसी प्रकार राजयोग भी एक वैज्ञानिक विधि है जिसका प्रयोग हम अपने जीवन पर करके इसकी सत्यता और उपयोगिता को अनुभव कर सकते हैं।

जैसे संस्कार वैसे विचार

मानव का मन निरन्तर विचार पैदा करता रहता है। विचारों की उत्पत्ति संस्कारों के अनुरूप होती है। जैसे संस्कार वैसे विचार, यह पूर्णतया सत्य है। कई पदार्थ ताले में बन्द होते हुए भी उनकी खुशबू चारों ओर बिखर जाती है और पता चल जाता है कि इस बन्द कमरे में चन्दन भरा है या सेन्ट की बोतलें आदि-आदि। इसी प्रकार संस्कार भी ताले में बन्द हैं अर्थात् अदृश्य हैं परन्तु उनके आधार पर उठने वाले संकल्पों से हम समझ जाते हैं कि हमारे संस्कार कैसे हैं। जब संकल्प उठते हैं तो केवल हमें पता पड़ता है परन्तु जब वे वाणी और कर्म में आ जाते हैं तो संसार को पता पड़ जाता है। इसलिए यदि संकल्पों की क्वालिटी ऐसी है जिसके वाणी या कर्म में आने पर अनेकों को कष्ट होगा, शान्ति भंग होगी तो उनका वहीं नियन्त्रण हो जाना चाहिए। इसे कन्ट्रोलिंग पावर अर्थात् आत्मनियन्त्रण कहते हैं। राजयोग के प्रयोग से इसे बढ़ाया जा सकता है।

ज़रूरत है बुराई के अंकुरों को नष्ट करने की

आत्मनियन्त्रण के अभाव में आज समाज अपराधों का अखाड़ा बन गया है। अपराध और शान्ति दोनों ही भीतर से उपजते हैं। यदि व्यक्ति को यह समझ आ जाए कि मेरा यह संकल्प अशान्तिकारक है और साथ-साथ उसे नियन्त्रित करने या मिटाने का आध्यात्मिक बल भी उसमें विकसित हो जाए तो समाज सुख-शान्ति से भरपूर, अपराध-मुक्त समाज बन सकता है। आध्यात्मिक बल के अभाव में आज व्यक्ति को बाहरी दबावों के द्वारा नियन्त्रित करने की कोशिश की जाती है। कारागृह में बन्द करना, मारना, पीटना, बांधना आदि सब बाहरी दबाव और भय हैं। इनसे व्यक्ति में भय के आधार पर अल्पकाल के लिए भले ही परिवर्तन आ जाए, वह डर या सहम जाए, छिप जाए या बदलने का दिखावा करे या मजबूरीवश मन को रोके पर बुराई के

जो अंकुर संस्कारों में हैं, वो नष्ट नहीं हो पाते और मौका पाकर पुन: जागृत हो जाते हैं। राजयोग के प्रयोग द्वारा संस्कारों में छिपे अपराध के अंकुर पूर्ण नष्ट हो जाते हैं और मानव देवत्व की ओर अग्रसर होता है।

संस्कार परिवर्तन के लिए प्रयोग

राजयोग का प्रयोग करने के लिए एकान्त में बैठें, स्वयं को भ्रकुटि सिंहासन पर विराजमान उजली, प्रकाशमान आत्मा महसूस करें, धीरे-धीरे भ्रकुटि सिंहासन को छोड़, साकार देह, सम्बन्ध, पदार्थों से उपराम हो परमधाम घर में पिता परमात्मा से मिलन मनाएँ और अपने में शान्ति की शक्ति भरें। अब एक स्थिति को इमर्ज करें कि कोई क्रोध से भरा हुआ व्यक्ति सामने आया और कई अनर्गल, झूठी, ग्लानि भरी बातें बोलने लगा। हम परमात्मा पिता से प्राप्त शान्ति की शक्ति के आनन्द में खोए हुए स्थिर, शान्त बैठे रहे और उसे भी शान्ति के प्रकम्पन देते रहे। उसके कह लेने के बाद हमने रहम भरे स्वर में कहा, कुछ और भी कहना है तो कह लीजिए। हमारी शान्ति भरी वाणी उसके भीतर के क्रोध को ठण्डा करती हुई महसूस होती है। वह अपने व्यवहार पर लज्जित-सा होता है और बिना कुछ और कहे लौट जाता है। इसके बाद जब भी मिलता है शान्ति और प्यार से व्यवहार करता है।

प्रैक्टिस परीक्षा से पहले करनी है

इस प्रकार की घटनाएँ जीवन में घटती रहती हैं। हमने ऐसी घटनाओं से अप्रभावित रहने की, इस प्रयोग द्वारा, पहले से रिहर्सल कर ली। यदि कभी ऐसा वास्तव में हो गया तो हमारी यह रिहर्सल हमें मदद करेगी। प्रैक्टिस तो परीक्षा से पहले करनी होती है। परीक्षा तो तुरन्त उत्तर मांगती है। यदि पहले से तैयारी की होगी तो हम अविचलित रहेंगे। यदि तैयारी के बिना परीक्षा का सामना करेंगे तो हो सकता है, हम अचल ना रह पाएँ। इस प्रकार के प्रयोग हम मन को नियन्त्रित करने, एकाग्र करने, किसी भी प्रकार के नुकसानकारक कर्म से मन को हटाने तथा मन की अनेक सुषुप्त योग्यताओं को व्यवहार में लाने में कर सकते हैं। इस प्रकार की रिहर्सल वे ही कर पाएंगे जो अपने व्यर्थ जाते संकल्पों को रोक देंगे। जैसे व्यर्थ जाते जल को बाँध बना कर दिशा दी जाती है इसी प्रकार व्यर्थ जाते संकल्पों को दिशा देकर परमात्मा पिता में लगा देने से आत्मिक शक्ति का संरक्षण होता है।

आवश्यक कार्य से नहीं, अनावश्यक बातों से मन को हटाएँ

मान लीजिए, किसी व्यक्ति को एक हज़ार कि.मी.का सफर तय करना है पर वह पाँच कि.मी.जाकर वापस लौट आता है, फिर चलता है और 7 कि.मी.जाकर वापस आता है, तो उसका 1000 कि.मी. का लक्ष्य कभी पूरा भी होगा, यह सम्भावना बहुत कम रह जाती है। इसी प्रकार, हम भी संकल्पों की उलझन में, उधेड़-बुन में, दुविधा और द्वन्द्व में, भूत-भविष्य की कल्पनाओं में रहते हैं तो यह भी जिन्दगी के लक्ष्य तक पहुँचने से पहले ही व्यर्थ में अटकने जैसा है। व्यक्ति प्रतिदिन इस प्रकार के संकल्पों में कितना समय और शक्ति नष्ट करता है, आकलन करे तो खुद भी आश्चर्यचकित हो जाए। व्यर्थ जाने वाले मन के संकल्पों को परमात्मा पिता में लगाकर उनसे शक्तियाँ प्राप्त करने का तरीका है राजयोग। इसके लिए किसी भी आवश्यक कार्य से मन को हटाकर परमात्मा में लगाने की आवश्यकता नहीं है वरन अनावश्यक बातों में लगे मन को हटाने का अभ्यास करना है। इस प्रकार के अभ्यास से हम मन के मालिक और संकल्पों के धनी बन जाते हैं और जीवन में आने वाली परीक्षाओं में सहज ही उत्तीर्ण हो सकते हैं।

– ब्र.कु. आत्म प्रकाश

जो भगवान से संबंध जोड़ते हैं, वे भाग्यवान बन जाते हैं।

प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के

दिव्य बुद्धि के वरदान से विभूषित आदरणीया दादी जानकी जी, हर प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देकर आत्मा को संतोष से भर देती हैं। बुद्धिवानों की बुद्धि बाबा ने उन्हें ऐसी कला प्रदान की है कि वे उलझे कर्मों की गुत्थियाँ सुलझाकर समाधानस्वरूप बना देती हैं। प्रस्तुत हैं भाई-बहनों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के दादी जानकी द्वारा दिये गये उत्तर

– सम्पादक

प्रश्नः- आप इन दिनों बाबा से किस तरह से चिटचैट करती हैं?

उत्तरः- जब दोनों साथी परिपक्व होते हैं तो बात कम करते हैं पर दोनों के मंगल मिलन से हर एक को लाइट-माइट का अनुभव होता है। यह एक शक्ति है आज्ञाकारी बनने की। आज्ञाकारी अर्थात् सिवाए बाबा के और कोई याद आता ही नहीं है और थोड़ा भी निष्फल नहीं हुए हैं। क्या करें, यह मजबूरी जब भी आती है माना बाबा से सम्बन्ध नहीं है। बाबा के हर बोल के लिए कदर है, उसी प्रमाण अपनी जीवन-यात्रा सफल की है। तन-मन-धन मेरा नहीं है, कहाँ भी थोड़ा भी जो मेरा है, वो अन्दर खींचता है। सम्बन्ध में मेरापन है, तन में मेरापन है, कहीं पर भी मेरापन है तो उसको समर्पित कैसे कहेंगे? कुछ मेरा नहीं माना समर्पण। बाबा ऐसे बच्चे को छत्रछाया के नीचे ऐसे रखता है जैसे गोदी में लेके गले का हार बनाया। अभी सेवा में छत्रछाया है। कुछ और संकल्प है ही नहीं।

प्रश्नः- हमारे में ऐसी समझ कैसे आये जो हम समझ सकें कि सही समय पर, क्या सही करने का है?

उत्तरः- कोई सरकमस्टांस है तो कोई बात नहीं है, बाबा बैठे हैं, यह अन्दर में विश्वास हो, निश्चय रहे। सोचने से बात बड़ी हो जाती है। बाबा बैठे हैं... इसलिए चिंता करने की बात नहीं है। हमने 42 सालों से विदेश सेवा के अनुभव में देखा है, कई जगह पर भूकम्प आया होगा, कोई आपदा आयी होगी पर बाबा के बच्चे सुरक्षित रहे हैं। कुछ भी हुआ है फिर भी किसी बच्चे को कुछ भी नहीं हुआ है क्योंकि ऐसों की सम्भाल करने के लिए बाबा कोई-न-कोई विधि अपनाता है और वो विधि फिर सारे जीवन काम आती है। यह बहुतकाल से भगवान के साथ का अनुभव है इसलिए कभी भी कुछ भी होता है तो कभी यह नहीं कहो कि मैं क्या करूँ? बाबा को याद करते रहो तो कोई-न-कोई युक्ति वा समझ बाबा वक्त पर दे देते हैं। बाबा की याद में अच्छी तरह से जीवन को सफल करो।

प्रश्नः- हमारा ड्रामा में और बाबा में तो पूरा विश्वास है लेकिन खुद में थोड़ा कम है तो उस विश्वास को कैसे बढ़ायें?

उत्तरः- विश्वास बढ़ता तभी है जब कोई भी बात के विस्तार में नहीं जाते हैं। क्या करूँ वा कैसे करूँ, इस प्रकार सोचा तो बात के विस्तार में चले गये। ड्रामा अनुसार परीक्षा आयी है, बाबा बैठे हैं, वन्डरफुल है, ठीक हो जाती है। फिर स्वत: अच्छी बातें हमारे से होंगी, यह विश्वास है। बाबा ने कराया, मैंने किया। मैं कैसे करूँ... माना बाबा में निश्चय नहीं है। ड्रामा की नॉलेज बहुत गहरी है, बाबा सारा दिन स्मृति दिलाता है कि यह मेरा बच्चा कल्प पहले वाला है। बाबा ने कहा, मेरा बच्चा, तो मुझे फीलिंग आयी। बाबा ने कहा, स्वदर्शन चक्र फिराओ, स्वदर्शन चक्र नहीं फिराते हो तो अपने में विश्वास नहीं होता है। मेरे को अपने में विश्वास है, ड्रामा की नॉलेज अच्छा चला रही है, बाबा मेरा बाप, टीचर, सतगुरु है। मेरा बाप धर्मराज भी है,

यह याद रखने से मन-वाणी-कर्म पर अटेन्शन रहता है। इससे संकल्प, समय भी सफल होते हैं। एक घड़ी भी निष्फल नहीं जायेगी।

प्रश्नः- कई युवा चाहे योग में, चाहे कर्मणा वा दिनचर्या में जब अनुशासन में नहीं चलते हैं तो लगता है कि वे अपने आपको ही धोखा दे रहे हैं, अनुशासन के साथ मित्रता हम कैसे बनायें।

उत्तरः- सबसे पहले तो अनुशासन के महत्व को समझना है जैसे क्लास में समय पर आना, अमृतवेले योग करना, शाम का योग करना आदि। अलबेलाई, आलस्य और बहाना ये तीन बातें नहीं चाहिएँ। कोई भी, कुछ भी बोले, बाप की पालना, पढ़ाई की कदर हो। जो बाबा से मिला है उसकी कदर हो तो वह स्वतः अनुशासन में चलाती है। थोड़ी भी अलबेलाई भूलें कराती है। कराची में एक बार मम्मा क्लास में एक मिनट लेट हुई। बाबा क्लास में चले गये तो मम्मा वहीं सीढ़ियों पर बैठ गयी। हमने कहा कि मम्मा ऊपर क्लास में चलो ना, तो मम्मा ने कहा, मैं लायक नहीं हूँ, बाबा क्लास में पहुंच गये हैं, अभी मैं कैसे जाऊं। तो ऐसा अनुशासन हो। मैं कभी बहाना नहीं दे सकती हूँ, जो समय पर करने का महत्व है, वह पता है। अनुशासन से भी मार्क्स मिलते हैं। कोई भी काम समय पर करें, यह भी अनुशासन है।

प्रश्नः- आत्मा पंछी में उड़ने का बल कब आता है?

उत्तरः- क्वेश्चन माना क्यू में खड़ा होना, उत्तर मिलेगा तो भी वह नहीं सुनेगा। सुने तो आगे बढ़े ना। पंख टूटे पड़े हैं। भले बाबा कहते हैं, चल उड़ जा रे पंछी... पर पंछी तभी उड़ेगा जब देश बेगाना समझेगा। मेरा नहीं है, पराया है। संगम का यह समय बताता है कि यह देश पुराना है, पराया है। बाप नया बनाने आते हैं। बाप कोई पुराने की मरम्मत करने नहीं आते हैं, नया बनाने आते हैं। तो देश देखो, सम्बन्ध देखो, कुछ भी हमारा नहीं। नाममात्र हम एक साथ बैठे हैं। बाबा की दृष्टि से उस पार चले जाते हैं। बाबा कभी कहते हैं, मेरे को याद करो, कभी कहते हैं, मेरे घर को याद करो। बैठे यहाँ सामने हैं, पर जहाँ से, जिस घर से आये हुए हैं वो हमारा भी घर है। याद में हर एक का भिन्न-भिन्न प्रकार का अनुभव होगा। कभी अपने को आत्मा समझने से बाबा को याद करना सहज है। कभी आत्मा समझने में समय लगता है, पर बाबा की याद से आत्मा के स्वरूप में टिक जाते हैं। कभी आत्मा हूँ... बाबा ने खींच लिया, कभी बाबा की खींच से आत्म-अभिमानी बन जाते हैं। मतलब हमको बाबा को याद करना है, कैसे भी करके। याद करना नहीं पर याद में रहना है। ऐसी याद में रहना है जिससे आत्मा पवित्र बनती जाये।

प्रश्नः- ड्रामा के अन्दर आपको कोई सीन करने के लिए कहा जाये तो आप कौन-सी सीन करना पसंद करेंगी?

उत्तरः- जहाँ देखेंगी कोई विघ्न है, सूक्ष्म पावरफुल मनसा संकल्प से चेंज करने की सेवा करेंगी। पॉजिटिव में पावर है नेगेटिव को खत्म करने की।

प्रश्नः- किसी के अवगुण चित्त पर रखने की सज़ा क्या है?

उत्तरः- हम एक-दो के गुण उठायें, किसी के भी अवगुण को कभी भी चित्त पर न रखें। किसी का अवगुण चित्त पर रखना, इसकी सज़ा यह है कि ज्ञान धारण नहीं होगा, अमृतवेले नींद आयेगी, क्लास में लेट आयेंगे, यह भोगना है। सारा समय संकल्प उस भोगने में ही खत्म होंगे तो निरंतर योगी कब बनेंगे? बाबा तो चाहते हैं, मेरा बच्चा निरंतर योगी रहे। जो भी बोझ है वो मेरे को दे दो, यह बाबा ऑफर करते हैं। बोझ बाबा को दे करके हल्के हो जाओ, लाइट बनो और लाइट से काम लो। माइट बाबा देते हैं, फिर सब कुछ राइट हो जाता है। शिवबाबा जैसा कोई नहीं, ब्रह्मा बाबा जैसा कोई नहीं, हम बच्चों जैसा भी कोई नहीं है। इतने बड़े संगठन में स्नेह, सहयोग, सहानुभूति देने की सेवा जितनी करो उतना ही कराने वाला हक लगाके हमसे कराता है। ❖

'पत्र' संपादक के नाम

जून, 2014 अंक में ''क्या खूब कहा'' कविता के संकलनकर्त्ता को मेरा स्नेहिल, विनम्र शिष्टाचार सहित अभिवादन। रचना बहुत ही सुंदर है। दैनिक जीवन में प्राय: रोज़ उसकी कड़ी दिखती है। इंसानियत की सही परिभाषा है। गरीब-अमीर की दैनिक चर्चा एवं कर्त्तव्य को सुंदर तरीके से प्रदर्शित किया है। बहुत ही शिक्षाप्रद है।

– भुवनेश्वर प्रसाद गुप्ता,
रिटायर्ड पोस्ट मास्टर, दुर्ग

जुलाई, 2014 'स्वर्ण जयंती विशेषांक' बहुत ही विशेष है। ज्ञानामृत के प्रति दादियों और वरिष्ठ भाइयों-बहनों के शुभकामना संदेश अपनी अलग ही खुशबू बिखेर रहे हैं। लेखकों की अनुभूतियाँ इसकी शान में चार-चांद लगा रही हैं। प्रत्येक लेख सोने जैसा विशेष है। ''दीदी की अद्भुत पालना और सम्भाल'' लेख द्वारा सरल शब्दों में दीदी जी की महिमा को जाना। ''बिछुड़ने लगा तो रोने न दिया'' लेख के अन्त में लिखी कविता बहुत सुन्दर है। ''मैंने जाना सच्ची खुशी को'' लेख में लेखिका बहन ने अपना अनुभव इतना सच्चाई और सफाई से लिखा कि रोम-रोम खुशी से झूम उठा और एक नई प्रेरणा मिली।

– ब्रह्माकुमार विनोद, टोंक

मई, 2014 के सम्पादकीय लेख 'व्यवहारिक सौन्दर्य' से सीख मिली कि प्रतिदिन स्थूल दर्पण में देखकर हम अपने बाल संवार लेते हैं, कपड़े व्यवस्थित कर लेते हैं इसी प्रकार प्रतिदिन ज्ञान-दर्पण में देखकर व्यवहारिक सौन्दर्य को भी ठीक कर लेना चाहिए।

– ब्र.कु.नीलकन्ठ, धनबाद

ज्ञानामृत के एक अनुभव ने मेरी ज़िंदगी बदल दी। मैं जिस दिन से बाबा की बच्ची बनी उसी दिन से इसे नियमित पढ़ती आ रही हूँ। नियमित योगाभ्यास और ज्ञान श्रवण से हर परिस्थिति को सहज पार कर लेती हूँ। लेकिन एक दिन ऐसा आया जो मेरे लिए एक बात को सहन करना मुश्किल ही नहीं नामुमकिन हो गया। बाबा को सब बताकर योग लगाने बैठी पर मन हलचल से भरा था, एकाग्र ही नहीं हो रहा था। घर में भी किसी काम में मन नहीं लग रहा था। बहुत बेचैन थी, क्या करूँ, क्या नहीं? विचार आया, ज्ञानामृत निकालकर पढ़ूँ। बस मैंने ज्ञानामृत का ''मन पर जीत'' लेख पढ़ा और मेरा पूरा मूड ही चेंज हो गया। इसलिए कहती हूँ, यह साधारण पत्रिका नहीं, अध्यात्म से भरपूर, मनोरंजन से भरी हुई शक्तिशाली टॉनिक है जिसे पढ़कर बुद्धि फ्रेश, शक्तिशाली हो जाती है। मन शांत और सरल हो जाता है। जितना लिखूँ उतना कम है। ढेर सारी शुभकामनाओं के साथ ज्ञानामृत परिवार को धन्यवाद।

''परमपिता परमेश्वर की जो
यश-गाथा को गाता
पुत्र बनें हम पिता के सच्चे
'ज्ञानामृत' सिखलाता''

– ब्रह्माकुमारी कल्पना लाहोटी,
पूर्व नगराध्यक्षा, जालना

हर आत्मा को बहुत भाती है
उदास मन में उमंग जगाती है
यदि आप हार गए
तो निराश मत होना
विपरीत परिस्थितियों में भी
कभी आश मत खोना
उठा लें 'ज्ञानामृत' और पढ़ लें
यहीं से आशा की किरण आती है
रोती-सिसकती आत्माओं को
बड़े प्यार से सहलाती है
एक-एक लेख पढ़ने से
आत्मजागृति हो जाती है
निर्धनता मिटती और
झोली ज्ञानधन से भर जाती है
जीवन के सूनेपन में बहार ले आती है
सच कहूँ तो 'ज्ञानामृत'
हर आत्मा को अमृत पिलाती है।

– ब्रह्माकुमार झालम, राजनांदगाँव

ईश्वरीय कारोबार में आदर्श व्यवस्था संपन्न करने की ज़रूरत – 13

* ब्रह्माकुमार रमेश, मुंबई (गामदेवी)

मास्टर ऑफ डिवाइन एडमिनिस्ट्रेशन (Master of Divine Administration) के बारे में हम विभिन्न लेखों द्वारा विचार कर रहे हैं ताकि इस प्रकार का दैवी कारोबार वर्तमान तथा भविष्य के जीवन में हम अच्छी रीति कर सकें। इस कारोबार के बारे में पश्चिमी दुनिया के लोगों ने अच्छी-अच्छी बातें बताई हैं जिसमें से एक गुण है शुद्धता जिसे अंग्रेजी में Clean कहा जाता हैं, इस गुण पर हम इस लेख में विचार करेंगे।

Clean का अर्थ शुद्ध होता है और इसी कारण हमारी आध्यात्मिक परिभाषा में यह बात आती है कि जितना चरित्र शुद्ध होगा अर्थात् जितना माया के पाँच विकारों की छाया से बचे रहेंगे, उतना ही सतयुगी दुनिया में श्रेष्ठ कारोबार के निमित्त बन सकते हैं। निर्मल चरित्र का अर्थ सिर्फ ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करना ही नहीं है अपितु जैसा कि अव्यक्त बापदादा ने कहा है, ब्रह्माचारी बनना। जैसे ब्रह्मा बाबा ने सभी विकारों एवं प्रलोभनों पर विजय प्राप्त की, ऐसे हमें भी श्रेष्ठ चरित्रवान बनना है अर्थात् ब्रह्माचारी बनना है।

भारतीय संस्कृति में भी शुद्ध चरित्र के बारे में अनेक बातें लिखी हुई हैं जैसे राजा भर्तृहरी को एक श्रीफल मिला था और उस परीक्षा में राजा की रानी पिंगला असफल हुई थी और परिणामस्वरूप राजा ने संन्यास धारण किया, ऐसी बातें शास्त्रों में आती हैं। गौतम ऋषि ने भी अपनी पत्नी अहिल्या को इन्द्र से उत्पन्न हुई समस्या के कारण श्राप दिया और उसे शिला बनाया। श्रीराम के चरण जब उस शिला को स्पर्श हुए तब वह श्रापमुक्त हुई और पुन: अपने मानवीय स्वरूप में लौट आई। ऐसे ही अनुसूईया के बारे में भी शास्त्रों में बताया गया है कि तीन देवतायें उसके सतीत्व की परीक्षा लेने के लिए आये तो उसने तीनों ही देवताओं को बालस्वरूप में परिवर्तन किया और परीक्षा में उत्तीर्ण हुई।

इंग्लैंड के राजवंश की परंपरा में भी श्रेष्ठ चरित्र का ध्यान रखा गया है और इसी कारण वर्तमान रानी एलिजाबेथ द्वितीय के पिता किंग जार्ज के बड़े भाई किंग एडवर्ड, जो उस समय इंग्लैंड के राजा थे, उन्हें लेडी वोलिस सिम्पसन से संबंध के कारण राजगद्दी का त्याग करना पड़ा और उन्होंने फ्रांस में जाकर अपना शेष जीवन लेडी सिम्पसन के साथ व्यतीत किया। ऐसे ही अमेरिका के राष्ट्रपति निक्सन को भी अपने चारित्रिक दोषों के कारण राष्ट्रप्रमुख के पद से इस्तीफा देना पड़ा।

ज्ञानमार्ग में भी ब्रह्मा बाबा के श्रेष्ठ जीवन चरित्र के बारे में हम सब जानते हैं। उनका लौकिक एवं अलौकिक जीवन अत्यंत चरित्र सम्पन्न था। हम सब जानते हैं कि एक बार बाबा जब नेपाल गये थे तो वहाँ के राजा एवं उनके परिवार ने बाबा को मांसाहार आदि कराने का प्रयत्न किया तब बाबा ने उन्हें कहा कि मैं यहाँ ज़ेवर बेचने आया हूँ, अपना ईमान नहीं इसलिए अपने आचरण व चरित्र को मैं शुद्ध ही रखूँगा।

एक बार पूने में मैं और ब्रह्मा बाबा रात को गोलीबार मैदान में पैदल करने गये थे तो मैंने बाबा से पूछा कि आप अपने पूर्व जीवन की बातें सबको क्यों बताते हो? बाबा ने मुझसे पूछा कि बच्चे, आप मुझे ऐसा प्रश्न क्यों पूछ रहे हो? मैंने बाबा को कहा कि बाबा, एक बार मैं एक संन्यासी का प्रवचन सुन रहा था, प्रवचन पूरा होने के बाद मैंने उनके पूर्व जीवन के बारे में उनसे

पूछा तो वे बहुत क्रोधित हुए और कहा कि ऐसा पूछने वाले तुम कौन होते हो! तो मैंने उन्हें कहा कि आपके संन्यासी बनने के मार्ग में जो भी कठिनाइयाँ आईं और कैसे आप उनमें उत्तीर्ण हुए, ये बातें अगर सबको बतायेंगे तो लोगों को भी मार्गदर्शन मिलेगा। इस पर उस संन्यासी ने कहा कि वे अपने पूर्व जीवन के बारे में किसी को कुछ नहीं बता सकते हैं। तब ब्रह्मा बाबा ने कहा कि संन्यासियों के जीवन में कुछ बातें शायद ऐसी हो जाती हैं जो उन्हें छिपानी पड़ती हैं परंतु मेरे पूर्व जीवन में और अब के जीवन में ऐसी कोई बात या घटना नहीं है जिसे मुझे औरों से छिपाना पड़े। मेरा जीवन तो एकदम शीशमहल जैसा पारदर्शी एवं स्पष्ट है और इसलिए मैं अपने जीवन की बातें सबको बताता हूँ। बाबा ने बताया कि अपने पूर्व जीवन में भी वे किसी भी प्रकार के प्रलोभन में नहीं फँसे एवं उनका शुद्ध चरित्र रहा। इसलिए परमपिता परमात्मा ने भी नई दैवी सृष्टि की स्थापना के लिए उनके ही रथ का आधार लिया और उन्हें सारी दुनिया का अलौकिक पिता बनाया।

दादी प्रकाशमणि जी ने भी एक संत सम्मेलन में बताया था कि उन्होंने अपने जीवनकाल में कभी भी झूठ नहीं बोला। उनका जीवन भी आदर्श तथा शुद्ध चरित्र वाला रहा। हमारे प्यारे ब्रह्मा बाबा, मातेश्वरीजी, दीदी मनमोहिनी जी तथा हमारी अन्य दादियों ने हमारे सामने ऐसा आदर्श रखा जो हमें सदैव श्रेष्ठ, शुद्ध और प्रलोभनों से मुक्त आदर्श जीवन जीने की प्रेरणा देता है।

हमारे संगमयुगी जीवन में अनेक प्रकार की समस्यायें, परीक्षायें आती हैं। मिसाल के रूप में, दादी निर्मलशान्ता जी जब कोलकाता सेवार्थ गये थे तो वहाँ पर एक समस्या आई जिसके बारे में उन्होंने ब्रह्मा बाबा को एक पत्र लिखा कि बंगाल में सौभाग्यवती स्त्रियों को मछली खानी पड़ती है। अगर वे नहीं खायें तो उनकी सास कहेगी कि उनका बेटा मर जायेगा और इस कारण सौभाग्यवती स्त्री को मछली खानी ही पड़ती है। ऐसी मछली खाने वाली माताओं को सेवाकेन्द्र पर आकर मुरली सुनने की अनुमति देनी चाहिए या नहीं। उस समय मैं मधुबन में था, बाबा ने मेरे सामने ही वह पत्र पढ़ा और उत्तर मुझसे पूछा। मैंने बाबा को कहा कि नहीं। फिर मैंने कहा कि बाबा आप जो भी उत्तर देंगे वह मुझे भी बताना। तब बाबा ने मुझे कहा कि बच्चे, अशुद्ध आहार लेना, यह इन माताओं की मजबूरी है जबकि कई लोग इसे मौज के कारण खाते हैं तो हरेक का परिणाम अलग-अलग होता है। जैसे परीक्षा में 6 सवाल हैं तो कोई सभी प्रश्नों के उत्तर लिखते, कोई 5 का, तो कोई 4 या 3 का उत्तर लिखते हैं। तो जो जितने प्रश्नों के उत्तर जैसे लिखेंगे उस अनुसार उन्हें वैसे ही मार्क्स मिलेंगे। ठीक उसी प्रकार इस ज्ञान मार्ग में भी जो चार पेपर हैं उनमें से एक पेपर अन्नशुद्धि का है जिसमें इन माताओं को कम मार्क्स मिलेंगे परंतु पवित्रता, ज्ञान की धारणा, योग आदि में अगर ये अच्छी हैं तो उनमें इन्हें अच्छे मार्क्स मिलेंगे। तो क्यों नहीं हम इन माताओं को क्लास में आने दें, उन्हें अन्नशुद्धि के पेपर में कम मार्क्स मिलेंगे।

कई आत्मायें मजबूरी में मजबूर होते हैं और कई मज़बूत बन उनका सामना करते हैं। जो मजबूरी में मज़बूत बन परिस्थितियों का सामना कर सिद्धान्तों की पालना करते हैं उन्हें पूर्ण मार्क्स मिलते हैं और जो मजबूर होते हैं और परिस्थितियों के वश होते हैं उन्हें कम मार्क्स मिलते हैं। जैसे पुष्पशांता दादी एक बहुत अमीर व्यक्ति की पत्नी तथा 6 बच्चों की माँ थी परंतु वह सब बन्धनों से मुक्त हो, निर्मोही बन ईश्वरीय सेवा में समर्पित हो गई अर्थात् उन्होंने मजबूरी की परीक्षा का मज़बूत बन सामना किया और उत्तीर्ण हुई तो उन्हें फुल मार्क्स मिलेंगे। जो जितने परसेन्ट में पास होते उन्हें उतने मार्क्स मिलते हैं।

इस प्रकार ईश्वरीय ज्ञान और

पुरुषार्थ के आधार पर ही राजधानी स्थापन हो रही है। इस राजधानी में महाराजा, महारानी, राजपरिवार, साहूकार, रॉयल प्रजा, साधारण प्रजा, दास-दासी आदि सब प्रकार के कारोबार करने वाले होंगे। ऐसे ही सतयुग के आदि में आने वाले तथा उसके बाद अलग-अलग जन्मों में आने वालों की थोड़ी-थोड़ी उतरती कला होगी। अभी जिस प्रकार का पुरुषार्थ होगा उसी अनुसार हर पेपर में मार्क्स मिलेंगे और वैसा ही पद मिलेगा। इसी के आधार पर बापदादा ने कहा है कि 16000 की माला में पहले दाने और आखिरी दाने में बहुत बड़ा अंतर होता है। श्रेष्ठ कारोबार और श्रेष्ठ जीवन बनाने वाले माला में पहले आयेंगे और उसके बाद नम्बरवार आयेंगे। इस तरह हरेक आत्मा अपने इस ईश्वरीय जीवन में अपना आचरण, व्यवहार कितना शुद्ध रखते, कितना परिस्थितियों में पास होते हैं उस अनुसार उन्हें उनका भविष्य पद मिलता है। सतयुगी और त्रेतायुगी दुनिया में पद तथा जीवन कितना ऊँच और लम्बा होगा, वह हमारे वर्तमान पुरुषार्थ पर निर्भर है।

संगमयुग पर देखते हैं कि कइयों का पुरुषार्थ बहुत ही श्रेष्ठ होता है और उस तीव्र पुरुषार्थ के आधार पर ही उन्हें ईश्वरीय परिवार में बहुत सी ज़िम्मेदारियाँ मिलती हैं और वे उसे स्वीकार कर आगे बढ़ते हैं। हमारी धारणाओं के आधार पर ही सब कार्य होते हैं। बाबा के ज्ञान के आधार पर धर्म की परिभाषा है **धारणा ततो धर्म:** अर्थात धर्म में मुख्य बात धारणा होती है, नाममात्र धर्म नहीं। धर्म जीवन जीने की कला सिखाता है इसलिए सतयुग-त्रेतायुग को धर्मयुग कहा गया है।

इन सब बातों को देखते हुए हमें अपने वर्तमान जीवन के बारे में सोचना है कि हम समर्पित हैं या गृहस्थ में रहते ट्रस्टी जीवन व्यतीत करते हैं परंतु कहाँ तक शिवबाबा की श्रीमत पर चलते हैं। उसके आधार पर हमारे वर्तमान व भविष्य जीवन की प्रालब्ध बनती है। अत: हमें अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाने के लिए अपने जीवन में हर प्रकार की शुद्धता लानी चाहिए। हमारा जीवन जितना शुद्ध बनेगा उतना निखरेगा। मैनेजमेन्ट गुरुओं ने कहा है कि हमारा जीवन जितना Clean और Clear होगा उतने हम सभी के विश्वासपात्र बनेंगे। जितना हमारा जीवन शुद्ध बनेगा उतना ही सतोप्रधान समयानुसार हम इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर आकर अपना पार्ट बजायेंगे।

ईश्वरीय जीवन जैसे कि ओलम्पिक का खेल है जिसमें एक है लम्बी दौड़ और दूसरी है हाई जम्प। सृष्टि रूपी रंगमंच पर 5000 वर्ष की लम्बी अवधि में हम कब आयेंगे उसे कहेंगे लम्बी दौड़ और कितना ऊँच पद पायेंगे वह है हाई जम्प। जैसे ओलम्पिक में पहले नंबर वाला स्वर्ण पदक, दूसरे नंबर वाला रजत पदक और तीसरे नंबर वाला कांस्य पदक लेता है वैसे ही यह संगमयुगी जीवन भी एक रेस, एक खेल है। इसमें भी जो गोल्ड मैडल लेते हैं वे सतयुगी दुनिया में श्रेष्ठ पद प्राप्त करेंगे और स्वर्णयुग में आयेंगे, दूसरे नंबर वाले त्रेतायुग में आयेंगे और बाकी बाद में क्रमश: आते रहेंगे।

इस प्रकार इस ड्रामा की ओलम्पिक रेस के अन्दर हम लॉंग जम्प (long jump) और हाई जम्प (high jump) में कितने नंबर ले सकते हैं, यह हमारे पर निर्भर करता हैं। इसके लिए हमें हमारे वर्तमान ब्राह्मण जीवन को बहुत ही श्रेष्ठ बनाना पड़ेगा, अपना आचरण, व्यवहार अत्यंत शुद्ध बनाना होगा। जितना हम हर परिस्थिति का सामना कर उसमें उत्तीर्ण होंगे, निखरेंगे उतने शुद्ध बनेंगे और सृष्टि के आरंभकाल से आकर अपना राज्य कर सकेंगे। इस शुद्धता को अपने जीवन में अपनाने से ही हम मास्टर ऑफ डिवाइन एडमिनिस्ट्रेशन बनेंगे और हमें सफलता मिलेगी। ❖

व्यर्थ में बुद्धि को उलझाने से आत्मा का तेज नष्ट होता है

गतांक से आगे...

सार्वभौमिक बंधुत्व का आधार मित्रता

* ब्रह्माकुमार नरेश, मुजफ्फरनगर

अहंकारवश मित्र शत्रु बन जाते हैं और स्वार्थवश शत्रु मित्र बन जाते हैं। मित्रता की परख लम्बे समय में हो पाती है परन्तु शत्रुता का पता तो पल भर में चल जाता है जैसे कि मधुर फूल लम्बे समय में खिलते हैं और घास कुछ ही समय में उग आती है। धैर्य व सहनशीलता का गुण फूल के समान है, जो मित्रता की सुगंध है। उद्दंडता व अहंकार का अवगुण घास के समान है, जो कि शत्रुता की जड़ है। घास नष्ट होने पर भी इसकी जड़ें पुन: घास पैदा कर देती हैं। फूल देव प्रतिमाओं के काम आते हैं और घास पशुओं के। मित्र को आड़े वक्त में कुछ कहना नहीं पड़ता, वह तो आवश्यकता पड़ने पर स्वयं ही मददगार बन कर सामने आ जाता है। उसी प्रकार शत्रु को ना छेड़े जाने पर भी वह अपनी दुर्भावना को व्यक्त करने में देर नहीं करता और हानि पहुंचाने का कोई भी मौका नहीं गंवाता।

सतयुग में सभी एक-दूसरे के मित्र थे

जिस भी मनुष्य में प्रेम का गुण मौलिक रूप में कार्य कर रहा है, वह तो मिलते ही मित्र जैसा व्यवहार करता है। दूसरा कैसा भी हो, उसे वह अपनी मित्रता के आलिंगन में समेट लेता है। रवीन्द्र नाथ टैगोर के अनुसार Depth of friendship does not depend on length of acquaintance अर्थात् मित्रता की गहराई मित्रों की लम्बी जान-पहचान से नहीं आंकी जा सकती। मित्रता तो अच्छे संस्कार होने पर तत्काल कायम हो जाती है। ऐसे में दूसरा यदि प्रेम-विहीन व्यक्ति है, तो भी पहले वाले को फर्क नहीं पड़ता क्योंकि उसे तो सभी मित्र दिखाई पड़ते हैं। सतयुग में चूंकि सभी प्रेम-स्वरूप थे अत: वहां सभी एक-दूसरे के मित्र थे।

गांधीजी ने एक बार कहा था कि मैं एक मनुष्य और दूसरे मनुष्य के बीच स्थायी शत्रुता की बात नहीं सोच सकता क्योंकि मैं पुनर्जन्म के सिद्धान्त में विश्वास रखता हूं। मैं इस आशा को लेकर जीवित हूं कि यदि इस जन्म में नहीं तो किसी दूसरे जन्म में मैं समूची मानवता को मैत्रीपूर्वक गले लगा सकूंगा। आज ब्रह्माकुमार-कुमारियां भी समूची मानवता को मैत्रीपूर्वक गले ही तो लगा रहे हैं। यह एकमात्र ऐसी ईश्वरीय संस्था है जहां छोटा हो या बड़ा, गरीब हो या अमीर, हिन्दू हो या मुसलमान-ईसाई, भारत में हो या विदेश में, सभी को नि:शुल्क ज्ञान व प्रेम बांटा जाता है।

शक्तियाँ हैं ईश्वर प्रदत्त, अवगुण हैं माया प्रदत्त

मित्रों के बीच भाषा से ज्यादा भासना व आसुरी अवगुणों से ज्यादा दैवी गुण काम करते हैं। एक सहनशीलता का गुण, ईर्ष्या, द्वेष, अपशब्द, अपमान, मनमुटाव, आवेश, उपेक्षा, तिरस्कार जैसे कितने ही अवगुणों का सामना कर सकता है। एक-एक आत्मिक गुण या शक्ति अनेक विकारों पर भारी पड़ती है क्योंकि आत्मिक गुण व शक्तियां हैं ईश्वर प्रदत्त जबकि अवगुण व विकार हैं माया या रावण प्रदत्त। ईश्वर की भक्ति आधा कल्प चलती है और ईश्वर से प्राप्त वर्सा अगले आधा कल्प तक कार्य करता है परन्तु अवगुण व विकार तो मात्र आधे कल्प ही चलते हैं। इस प्रकार ईश्वरीय कार्य में शाश्वतता है और आसुरी कार्य में है सीमाबद्धता। रावण का धूम-धड़ाका, चल रहे संगमयुग की समाप्ति के पहले ही बुझ जाता है। रावण की मित्रता मनुष्यों को काफी सुहाती है क्योंकि उससे उन्हें दैहिक सुख, वैभव, भोग-विलास आदि मिलते हैं बिना किसी प्रयास व संयम के। रावण निरन्तर दुख व अशान्ति देता रहता है परन्तु ऐसी माया फैलाए रखता है कि मनुष्य उसी

में सुख व शान्ति ढूँढ़ते रहते हैं जन्म-जन्म। परन्तु 63 जन्मों तक मित्रता का भ्रम फैलाने वाला रावण अन्तिम 63वें जन्म में ईश्वरीय शक्ति से परास्त हो जाता है।

मित्र वही जो दुख में बिना बुलाए आ जाये

अभी शिव परमात्मा संसार के सभी मनुष्यों से हर सम्बन्ध निभाने को उपलब्ध हैं। सुखी मनुष्यों ने उसे सतयुग व त्रेतायुग में बुलाया ही नहीं। कहावत है कि मित्र वही, जो सुख में बुलाने पर आए और दुख में बिना बुलाए ही आ जाये। दुख में परममित्र ईश्वर को बुलाने का साधन है उसका यथार्थ रीति स्मरण करना। यह परमपिता शिव की विशेष अनुकम्पा ही है, जो उसने कलियुग के अंत में आकर अपना परिचय दिया और बताया कि उसे किस रीति याद करना है। एक नवजात शिशु भी अपनी मां को याद करना स्वयं सीख लेता है परन्तु मन-बुद्धि व शरीर से विकसित मनुष्य को अपने परमपिता को याद करना, स्वयं उस परमपिता को आकर सिखाना पड़ता है। फिर यदि सिखाए जाने के बाद भी वह याद न कर पाये, तो इसका कारण ही है रावण से निभाई जा रही मित्रता। यह एक सत्य है कि एक साथ रावण व परमपिता शिव, दोनों से मित्रता नहीं निभाई जा सकती। दो नाव पर पैर रखने वाले की दुर्गति ही होती है। यदि आकाश की ऊंचाई या सागर की गहराई जैसा सतयुगी भाग्य बनाना है तो मटके जितने मायावी-भाग्य को त्यागना ही पड़ेगा। यदि मटके में भरे चनों को मुट्ठी में पकड़ रखा है तो उन्हें छोड़ने पर ही हाथ बाहर आकर असीम भाग्य का आलिंगन कर सकता है। दु:खमय जीवन भी मित्र के आलिंगन से सुखद बन जाता है। सुखद जीवन भी शत्रु के पदार्पण से दुख का अनुभव कराता है।

शत्रु का कल्याण करना अर्थात् उसे मित्र बनाना

गुप्त शत्रुता अर्थात् ऊपर से मित्रता दिखाना और अंदर से शत्रुता रखना। चन्द्रगुप्त ने नंद वंश का नाश कर राज्य पाया। उसका जब राजतिलक समारोह चल रहा था तो गुरु चाणक्य गायब थे। बाद में पता चला कि नंद राजा के समय के एक मंत्री आमर्त्य ने गुप्त शत्रुता के वश षड्यंत्र रचा था कि राजतिलक समारोह में भारी तबाही मचाई जाए। परन्तु चाणक्य उस गुप्त शत्रु को पहचान गए थे और उससे युद्ध कर रहे थे। राजतिलक समारोह के बाद जब आमर्त्य को कैद कर लाया गया, तो चन्द्रगुप्त उसे कठोर सज़ा देना चाहते थे परन्तु चाणक्य ने आमर्त्य को महामंत्री बनवा दिया। आमर्त्य ने रो कर कहा कि आपने मेरे शरीर को ही नहीं, आत्मा को भी जीत लिया है। तो शत्रु का कल्याण किया जाना उसे मित्र बना देता है। जिसने शत्रुतावश गहन दुख दिया हो, उसकी भी भलाई करना तीव्र गति से आध्यात्मिक उन्नति का साधन है। शिव से योग-युक्त पुरुषार्थी ऐसा सहज ही कर पाता है।

मैत्री भावना सभी के प्रति

गुप्त शत्रुता की तरह सर्व के प्रति प्रत्यक्ष मित्रता भी हुआ करती है। विवेकानन्द अपनी किशोरावस्था में स्वास्थ्य के प्रति काफी ज़ागरूक थे और एक व्यायामशाला में नित्य जाया करते थे। एक दिन जब विवेकानन्द अपने मित्रों के साथ व्यायामशाला में एक झूला ठीक कर रहे थे तो उसी समय एक अंग्रेज नाविक विवेकानन्द व उनके मित्रों से किसी बात पर झगड़ा करने लगा। बात बढ़ती चली गई। इसी बीच व्यायामशाला का एक खम्भा उस अंग्रेज के सिर पर गिर गया जिससे वह ज़ख्मी हो कर गिर पड़ा। यह देख सभी मित्र घबराकर भाग खड़े हुए परन्तु विवेकानन्द ने अपनी कमीज़ फाड़ कर उसकी पट्टी बनाई और ज़ख्मी अंग्रेज के सिर पर बांध दी। विवेकानंद ने उसे पंखा हिलाकर उसकी तब तक सेवा की जब तक उसे होश नहीं आ गया। वह अंग्रेज बाद में विवेकानंद का घनिष्ठ मित्र बन गया। इससे यह सीखने को मिलता है कि आप भले ही सम्बन्ध-सम्पर्क वाले कुछ सीमित व्यक्तियों से मित्रता रखते हों परन्तु अन्दर मैत्री-भावना सभी के प्रति प्रत्यक्ष दिखाई देनी चाहिए।

(क्रमश:)

बाबा ने बनाया आयुष्वान

❊ ब्रह्माकुमारी पूनम, जीवन पार्क, नई दिल्ली

बारह सितंबर, 2012 की रात मैंने सपना देखा कि मुझे कैंसर जैसी भयानक बीमारी है। सुबह अपने युगल श्री राकेश चौहान को उस सपने के बारे में बताया। जाँच के लिए उसी दिन वे मुझे डॉक्टर के पास ले गये। चौदह सितंबर, 2012 को रिपार्ट आ गयी और कैंसर की पुष्टि हो गई।

साँई बाबा बदल कर बन गए ब्रह्मा बाबा

परिवार का हर सदस्य रो रहा था। मैंने बाबा से कहा, बाबा, मुझे हिम्मत दो ताकि मैं अपने दोनों बच्चों को सम्भाल सकूं। मुझे उनके भविष्य की चिन्ता सता रही थी। उस समय बड़ा बेटा दसवीं में और छोटा बेटा छठी कक्षा में पढ़ रहा था। चौदह सितम्बर की रात मैंने कुछ बाबा की याद में और कुछ सदमे के साये में काटी। सतरह सितम्बर ऑपरेशन की तारीख तय कर दी गई। निश्चित दिन मुझे ऑपरेशन थियेटर ले जाया गया। मन में डर नहीं था, निर्भीक होकर बाबा का नाम लेकर जा रही थी। आँखें बंद की तो साँई बाबा के दर्शन हुए। साँई बाबा कुछ क्षण पश्चात् ब्रह्मा बाबा में बदल गये। बाबा ने मेरे सिर पर हाथ रखा और मेरे साथ-साथ ऑपरेशन थियेटर में चल दिये। बाबा का साथ पाकर मुझे पूर्ण विश्वास हो गया कि अभी जीवन की सांसें बाकी हैं।

बाबा गिनती के साथ फूल देते गए

डॉक्टर और उनकी टीम ऑपरेशन के लिए तैयार थी। मैंने देखा, मेरे ब्रह्मा बाबा, मेरी आँखों के सामने डॉक्टर के लौकिक शरीर में प्रवेश कर गये। बाबा ने मेरा सफल ऑपरेशन अपने हाथों से किया। ऑपरेशन 8 घंटे चला। होश आया तो मैं दर्द से तड़प रही थी। चारों तरफ नलियों से घिरी हुई थी। दर्द के बीच बाबा को याद कर रही थी। अठारह तारीख की रात मैंने एक करिश्मा देखा। सफेद मोतिया के फूलों का सिंहासन मेरे नजदीक आ रहा था। दूर से आकृति पहचान न पायी। सिंहासन नज़दीक आया तो देखा, मेरे प्यारे बाबा मेरे समीप आ रहे हैं। बाबा ने बड़े प्यार से मेरे हाथ आगे कराये। मैंने हाथ खोल कर बाबा के सामने कर दिये। बाबा ने मुझे गिनती बोलने को कहा। मैं गिनती बोलती गयी और बाबा मुझे गिनती के साथ-

साथ फूल देते गये। तीस तक गिनती गिनने के बाद बाबा ने मुझे आगे न बोलने को कहा। बाबा ने मुझे कहा, प्यारी बच्ची, मैंने तीस साल तुम्हारी आयु में जोड़ दिये हैं। ऐसा कह बाबा अपने वतन चल दिए।

कमरे में भीनी खुशबू महक रही थी। मेरी आँखें बाबा को और अधिक निहारने के लिए उत्सुक थीं। मैं बाबा की शुक्रगुजार हूँ, बाबा ने मेरा इतना साथ दिया कि शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता। बाबा मेरे हैं, मैं बाबा की हूँ। मैं हमेशा के लिए अपने बाबा की हो चुकी हूँ। मैं पूर्ण रूप से स्वस्थ हूँ। बाबा ने युगल को साथ देने के लिए प्रेरित किया, वे भी पूर्ण रूप से मेरा साथ दे रहे हैं। ❖

क्षमाभाव के साथ दी गई शिक्षा ही वास्तविक शिक्षा है

विनाश छोड़, निर्माण अपनाएँ

* ब्रह्माकुमारी उर्मिला, संयुक्त संपादिका

धीमी होते-होते अचानक ट्रेन ठहर गई। चुरू और राजगढ़ के बीच, 12 बजे की जलती दोपहर में, बाजरे के खेतों के बीच ट्रेन के खड़े होने का कारण शायद कोई दूसरी ट्रेन की क्रॉसिंग होगी, हम यही सोचकर ज्ञान-चर्चा में लगे रहे। अभी पाँच मिनट भी नहीं हुए थे, अचानक एक बहन ने हमारी ज्ञान-चर्चा के बीच व्यवधान डालते हुए कहा, निकास द्वार पर चलकर तो देखो, बाहर क्या हो रहा है। उत्सुकतावश मैं और मेरे साथ 5-7 यात्री बहनें-भाई द्वार पर खड़े हुए और बाहर देखने लगे।

कुछ नौजवान खड़ी ट्रेन में से उतरकर बाजरे के खेतों में घुस गए थे। वहाँ लगे तरबूज तोड़-तोड़कर कन्धों पर जितने रख सकते थे, रखकर वापस ट्रेन की ओर आ रहे थे। ट्रेन की लाइन के पास पड़ी पत्थर की रोड़ियों पर बैठकर उन्होंने मुक्के मार-मार कर उन तरबूजों को फोड़ना शुरू किया। पर यह क्या, तरबूज कच्चे निकले, अन्दर की सफेद गिरी (गुदा) देखते ही तोड़ने वालों ने उन्हें खेतों की तरफ वापस फेंक दिया और ट्रेन में चढ़ गए।

क्या ये बद्दुआएँ लेने उतरे थे?

विद्या, धन और शारीरिक बल – तीनों से सम्पन्न उन नौजवानों को देखकर मेरा मन करुणा से भर उठा। विचार चला, इन्होंने तोड़कर फेंकने की यह मेहनत क्यों की? चिलचिलाती धूप में ट्रेन से उतरकर, गर्म रेत में भटकने के बाद इनके हाथ क्या लगा? किसी का नुकसान हुआ और इन्हें बदले में मिलेंगे...। जब किसान खेत के किनारे पड़े कच्चे, फूटे तरबूजों को देखेगा, कलेजे पर हाथ रख लेगा। उसकी आँखों के सामने तोड़ने वाले हाथ घूमने लगेंगे, क्या वह उन हाथों को दुआ दे पाएगा? क्या ये बद्दुआएँ लेने उतरे थे? भगवान करे, वो इन्हें माफ कर दे।

ज्वलन्त जरूरत है
नैतिक ज्ञान की

पुन: संकल्प आया, ट्रेन यदि खड़ी हो गई तो उन 15-20 मिनटों में कोई रचनात्मक कर्म भी तो हो सकता था। ये खेत में जाकर बाजरे के पौधों के साथ उगी घास को भी तो उखाड़ सकते थे, यह इस देश की कृषि में इनका रचनात्मक योगदान होता। ये पढ़े-लिखे हैं, अपने साथ कोई पुस्तक लाते, उसे पढ़कर समय सफल करते। ट्रेन में कई बुजुर्ग बैठे हैं, उनसे बातचीत कर लेते, उनके अनुभव पूछ लेते। कई बच्चे घूम रहे हैं, उनकी तोतली बातें सुन लेते। और कुछ नहीं तो अपने इष्ट में ध्यान लगाकर समय सफल कर लेते। करने को तो बहुत कुछ रचनात्मक कर सकते थे और इस विनाश-प्रक्रिया से बच सकते थे। चोरी से तो अच्छा था कि ट्रेन के शीशे ही चमका देते। मेरी विचार शृंखला इस निष्कर्ष पर आकर ठहर गई कि दया और सहानुभूति, नैतिकता, आध्यात्मिकता तथा कर्मगति की शिक्षा के अभाव में मानव के कर्म परपीड़ाजनक और विनाशकारी हो रहे हैं। मुझे महसूस हुआ कि देश के नौजवानों को नैतिक ज्ञान की ज्वलन्त ज़रूरत है।

बनाने वाला महान है,
मिटाने वाला तुच्छ है

भारत की खेती को उजाड़ने में अंग्रेज़ों ने कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी थी। भारी लगान के साथ हिंसा और अन्य अत्याचारों ने किसानों की कमर तोड़ डाली थी। वे खड़े खेतों में अपने घोड़े छोड़ देते थे, खेत कुछ खा लिए जाते थे और कुछ रोंद दिए जाते थे। भारी कुर्बानी देकर हमने उन्हें इस देश

से खदेड़ दिया ताकि हमारी कृषि और कृषक पुनः बुरे दिन ना देखें। पर यह क्या, ये कौन पैदा हो गए जिनकी शक्ल अपनों जैसी है पर कर्म परायों जैसे हैं। कृषि के दुश्मन तो वैसे ही बहुत हैं। कभी बन्दरों का उत्पात, कभी नील गायों का, कभी अतिवृष्टि, कभी अनावृष्टि, कभी ओले और कभी अंधड़। इन सबके बीच हर मौसम को झेलता हुआ, कभी ठिठुरता हुआ और कभी पसीना बहाता हुआ किसान, एक प्रहरी की भाँति अटल खड़ा रहता है। क्या हमें डाका डालने के लिए वही मिला? क्या हम इतने गरीब हैं कि उस गरीब से भी निरुद्देश्य छीनना चाहते हैं? पिछले कितने ही दिनों से जिन्हें वह सन्तान की तरह पाल रहा था, उन्हें तोड़ने और फेंकने में तो मात्र 5-10 मिनट ही लगे। बनाने में समय लगता है, मिटाने में नहीं। बनाने वाला महान है, मिटाने वाला तुच्छ है।

पूजा के साथ कर्मगति को भी समझें

गणेश चतुर्थी नज़दीक थी। मेरे साथ खड़ी महिला कहने लगी, मैंने गणेश जी की कहानी में सुना है, एक बार एक किसान के खेत से 16 दाने ले लेने की गलती उनसे हो गई थी, उन्हें 16 वर्षों तक उसके यहाँ सेवा करनी पड़ी थी। हमारी संस्कृति इतनी महान है जो देव-जीवन के माध्यम से हमें कर्म की गहन गति समझाती है। हम केवल गणेश जी की पूजा ही न करें बल्कि उनके जीवन से यह भी समझें कि कर्म का फल अनिवार्य रूप से स्वीकार करना पड़ता है, कोई भी इससे छूट नहीं सकता।

घोर मुसीबत सामने हो तो भी अनैतिक कर्म न करें

जब हम किसी का कुछ छीन रहे होते हैं, तोड़ते हैं, बरबाद करते हैं, नष्ट करते हैं, मिटाते हैं, खराब करते हैं तब हम इस ब्रह्माण्ड में नकारात्मक ऊर्जा फैला रहे होते हैं। जो देते हैं, भेजते हैं, फैलाते हैं वही तो हमारे पास अनिवार्य रूप से लौटता भी है। तो जो ऊर्जा हमने भेजी वह ब्रह्माण्ड की और भी नकारात्मक ऊर्जा को साथ लेकर हमारे पास लौट आती है। जब कहीं दुर्घटना हो जाती है तो दुर्घटनाग्रस्त व्यक्ति और उनके नजदीकी प्रियजन बहुधा यह कहते हुए सुने जाते हैं कि भगवान को हम ही मिले क्या, हमारे साथ ऐसा क्यों हुआ? पर जब हम नकारात्मक कर्म करते हैं तब नहीं सोचते कि हम ही यह कर्म क्यों कर रहे हैं? क्या उस नकारात्मक कर्म के बिना हमारा जीना दूभर हो रहा था। नैतिकता का नियम तो यह कहता है कि घोर मुसीबत सामने हो तो भी छीनने, चोरने, मारने, काटने का कर्म न करो और हम बिना किसी आवश्यकता के मात्र लोभ-लालच के वशीभूत हो ऐसे कर्म कर बैठते हैं तो बदले में बैठे-बैठे बिना बात मुसीबतें भी झेलते हैं।

बुराई को अंकुरण के समय ही उखाड़ फेंकें

पुराने समय की बात है, एक साधु ने एक किसान से पानी और कुछ खाने के लिए मांगा। किसान ने पानी पिला दिया और कुछ खिलाने से यह कहकर मना कर दिया कि मेरे खेत में उपजा अन्न राजसिक है, आपकी साधना बिगड़ जाएगी। साधु ने इसका कारण पूछा तो उसने कहा, मेरे पापी बैल ने पड़ोसी के खेत में घुसकर कुछ फसल खा ली थी। उस बैल से जोता हुआ अन्न राजसिक हो गया, सात्विक नहीं रहा। साधु यह सुनकर किसान को आशीर्वाद देकर आगे चला गया। जिस देश की संस्कृति इतनी महान है, उस देश के बच्चे-बच्चे को उस महान संस्कृति की जानकारी होनी चाहिए ताकि उनके कर्म महान हों। बात भली हो चाहे बुरी, छोटी हो या बड़ी, उसे करने से हमारे संस्कार वैसे बन जाते हैं। इसीलिए तो कहा जाता है, बुराई को उसी समय उखाड़ फेंको जब उसका अंकुरण हो रहा है। तरबूज तोड़ना, फेंकना कोई बहुत बड़ी बात नहीं है पर हमारे संस्कार तो गलत दिशा में जा रहे हैं ना। ये संस्कार कल हमें और अधिक बड़े विनाश की ओर ले जाएँ,

यह असम्भव नहीं है।

भगवान को कहते हैं, बिगड़ी बनाने वाला, न कि बिगाड़ने वाला। भगवान के बच्चे हम भी तो उन जैसे बनें। बिगड़ी को बनाएँ, न कि बनी को बिगाड़ें। जो औरों के काम बनाएगा उसके अपने काम बन जाएँगे, जो औरों के काम बिगाड़ेगा, उसके अपने काम भी बिगड़ जाएँगे। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की सभी शाखाओं में बच्चे से लेकर बूढ़े तक को कर्मों को सुखदायी बनाने की शिक्षा दी जाती है। इस नि:शुल्क शिक्षा का लाभ आप भी उठाइये और अपने जान-पहचान वालों को भी दिलवाइये। ऐसी शिक्षा से हर नागरिक कर्मठ, सच्चा और चरित्रवान बनेगा, वह निर्माण करेगा, विनाश नहीं। ❖

सफलता का मंत्र...पृष्ठ 31 का शेष

भी सफलता दिलाता है। हम ऐसे सहयोगी बनें जो दूसरे हमें देखकर योगी बन जाएँ।

सर्व का सहयोग लेना, यह कोई परावलम्बी स्थिति नहीं है बल्कि इससे तो यह सिद्ध होता है कि सभी के दिल में हमारे प्रति स्नेह है। सभी हमारी सफलता चाहते हैं। यह सहयोग हमारी लोकप्रियता का द्योतक है। सहयोग के प्रकार एवं विधियां अलग-अलग हो सकती हैं। यह सहयोग तन-मन-धन-जन-साधन आदि किसी भी रूप में मिल सकता है। सबसे श्रेष्ठ सहयोग है कार्य के प्रति शुभ संकल्प।

ब्रह्माकुमारीज़ में राजयोग का अभ्यास करते-करते परमात्मा पिता भोलेनाथ शिवबाबा ने हमारे जीवन में वे गुण और शक्तियां भर दिए हैं जिनसे स्वत: ही सर्व का सहयोग मिलता है और अन्तत: सफलता प्राप्त होती है। तो आइये, सफलता प्राप्ति के लिये हम सभी दूसरों से सहयोग प्राप्त करने की कला सीखें। ❖

भगवान की पनाह में

ब्रह्माकुमारी आशा, अजमेर

सन् 1998 में एक पर्चा मेरे हाथ में आया। उसे पढ़कर ज्यादा जानने की उत्सुकता जगी तो बस में साथ आने-जाने वाली एक सहशिक्षिका ने ईश्वरीय ज्ञान की कुछ कैसेट्स दीं। उनसे ज्ञान की बातें सुनीं और एक दिन समय निकालकर सेवाकेन्द्र पर गई। वहाँ बाबा के महावाक्य सुनाये जा रहे थे। मुझे पता नहीं था कि यह वही मुरली है जिसे सुनने के लिए गोप, गोपियाँ तड़पते थे। मैं उसे सुनकर अपनी सुध-बुध खो बैठी। ऐसा अनुभव हो रहा था जैसे ज्ञान सागर मुझ ज्ञान की प्यासी आत्मा की प्यास बुझा रहे हैं। फिर तो सेवाकेन्द्र जाने की लगन लग गई। ब्रह्माबाबा और मम्मा का घर में ही साक्षात्कार हुआ। और भी कई साक्षात्कार हुए। धारणाएँ आसानी से हो गईं, छह महीने में मधुबन आने का सौभाग्य भी मिल गया, भगवान से मिलन मनाया और अपने को शक्तिशाली अनुभव किया।

ज्ञान में चलते-चलते लौकिक परिवार में कई परीक्षाएँ आईं। पति को हृदयाघात हुआ, उन्हें तीन ब्लाकेज बताये गए और आपरेशन की तैयारी हुई। आपरेशन के एक दिन पहले बाबा ने कुछ टचिंग कराई, जिसके आधार पर मैंने आपरेशन करने से मना किया और भरी हुई 50,000 रुपये फीस वापिस ले आई। इसके बाद उन्हें ज्ञान का कोर्स कराया। परिणाम यह निकला कि आज वे स्वस्थ हैं। नियमित क्लास करते हैं। एक बाबा में सम्पूर्ण निश्चय के आधार पर सभी समस्याएँ खत्म होती गईं। अलौकिक जीवन खुशहाल होता गया। परिवार के सभी सदस्य बाबा के कार्य में सहयोगी बन गये हैं। एक दिन गीत बजा 'तेरी पनाहों में पलते हैं, तेरी ही राहों पे चलते हैं।' उसे सुन बाबा के प्यार में खो गई और दिल से निकला धन्यवाद बाबा, जो आपने मुझे अपनी पनाह में ले लिया। ❖

मुझे ज्ञानामृत मिल गयी

❊ ब्रह्माकुमार सुरेन्द्र कुमार वर्मा, रीवा (म.प्र.)

मैं बचपन से ही आध्यात्मिक ज्ञान पढ़ने में रुचि रखता था। जहाँ कहीं भी जाता था, यदि कोई किताब दिख जाती थी तो उठाकर पढ़ने लगता था और उसमें खो जाता था। उस पुस्तक को प्राप्त करने के लिए मैं झूठ भी बोल देता था कि मैंने नहीं ली, मेरे से खो गई या आप मुझसे इसके बदले दूसरी ले लो। मेरे सारे रिश्तेदार मुझसे परेशान थे कि यह कैसा लड़का है, हमेशा कोई न कोई अच्छी किताब उठा ले जाता है और कहता है, मुझसे खो गई।

पत्रिका में लिखी हर बात अच्छी लगी

मुझे क्या पता था कि मेरी यह आदत मुझे उससे मिला देगी जिसे सारी दुनिया खोज रही है। बात दिनांक 18.01.2011 की है। तब मैं ईश्वरीय ज्ञान से दूर था, सारा दिन टी.वी. देखता था, लड़ाई-झगड़ा करता था, तला-भुना खाता था। मेरी यही आदत मुझे पाण्डेय किराना स्टोर ले गई। मैं नमकीन खरीदने लगा तो जनवरी माह की ज्ञानामृत पत्रिका वहाँ पड़ी देखी जिसके मुखपृष्ठ पर बापदादा का चित्र बना था और लिखा था, ''आ जाओ लाडलो अब अव्यक्त हैं इशारे, बाबा खड़े हैं वतन में बाँहें पसारे।'' मैंने अपनी आदत अनुसार अंकल से पूछा, यह पत्रिका कहाँ से आती है? उन्होंने कहा, पता नहीं, दो सफेद वस्त्रधारी बहनें पहुँचा जाती हैं। मैं वहीं खड़ा होकर पत्रिका के पन्ने उलटता-पलटता रहा। फिर सोचा, अब पत्रिका ले चलते हैं अपने घर अंकल को बिना बताये, क्योंकि मांगेंगे तो कहीं अंकल मना न कर दें। पत्रिका एकदम नई थी। अंकल ने मेरे मन की बात जान ली और कहा, पढ़ना है? मैंने कहा, हाँ। उन्होंने कहा, ले जाओ, कल सुबह वापस दे जाना। अब 19.01.2011 को सुबह 5 बजे पत्रिका पढ़ी, पढ़ते-पढ़ते पत्रिका में लिखी हर बात अच्छी लगने लगी। मैंने सोचा, अब क्या करें, इसे लौटाना पड़ेगा। फोटो कॉपी में तो पैसा ज्यादा लगेगा। फिर मैंने देखा, उस की कीमत सात रुपये लिखी थी। मैंने सोचा, क्यों न पत्रिका खरीद ली जाये लेकिन यह तो पता नहीं था कि पत्रिका कहाँ से खरीदी जा सकती है। देखते ही देखते मुझे पत्रिका के अन्दर रसीद मिल गई जिस पर लिखा था, ''प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय, झिरिया, रीवा''। मुझे बेहद आंतरिक खुशी हुई, दोपहर

एक बजे मैं सेवाकेन्द्र पर पहुँच गया।

बाबाओं के बाबा से परिचय

जाते ही एक भाई ने, 'आप आत्मा हैं' वाला पोस्टर समझाना प्रारम्भ किया। मुझसे पूछा, आप कौन हो? मैंने कहा, मैं सुरेन्द्र हूँ। उन्होंने कहा, यह तो आपके शरीर का नाम है। मैंने आश्चर्य से कहा, शरीर का नाम? फिर उन्होंने समझाया कि आप कहते हो, मेरा हाथ, मेरा पैर; मैं पैर, मैं हाथ नहीं कहते हो। मुझे समझ में आ गया कि मैं हाथ-पैर से कार्य लेने वाली आत्मा हूँ। फिर मैं ज्ञानामृत का सदस्य बन गया। मुझे कहा गया कि आप सात दिन का कोर्स कर लो, जो नि:शुल्क है। कुछ दिनों के बाद मैंने कोर्स प्रारम्भ किया। कोर्स करते-करते प्यारे शिवबाबा से मेरा परिचय हो गया। पहले मुझे लगता था कि जैसे रामदेव बाबा, निर्मल बाबा हैं ऐसे ही ये

भी कोई शरीरधारी बाबा होंगे, पर कोर्स के बाद पता पड़ा कि ये तो बाबाओं के बाबा परमपिता शिवबाबा हैं।

जीवन हुआ धन्य-धन्य

मैंने तो कभी स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि पत्रिका ले लेने वाली मेरी यह बुरी आदत एक दिन मुझे विश्व रचयिता परमपिता परमात्मा शिवबाबा से मिला देगी। मैं बाबा का पक्का बच्चा बन रोज़ाना सुबह 6 बजे सेवाकेन्द्र पर जाकर राजयोग का अभ्यास करने लगा, मुरली सुनने लगा। इसके बाद मैंने शान्तिवन के विशाल डायमंड हाल में अपने बिछड़े हुए बापदादा से मंगल मिलन मनाया। सुख-शान्ति के गहन प्रकंपन मेरे अंतर्मन की गहराइयों को छूने लगे। मेरा जीवन धन्य-धन्य हो गया। दिल में यही गीत बज रहा था, ''तुम्हें पाके हमने जहाँ पा लिया है, ज़मीं तो ज़मीं आसमां पा लिया है।''

उस दिन से आज तक मैं बेफिक्र बादशाह बनकर जीवन जी रहा हूँ और बाबा की हर श्रीमत मेरे लिये है, यह समझकर चलता हूँ। मैं अपने प्यारे बाबा, मीठे बाबा, रहम दिल बाबा, रूहानी साजन, खुदा दोस्त का पद्मापद्म बार दिल से शुक्रिया करता हूँ। ज्ञानामृत पढ़ने से आत्मा को शक्ति व शान्ति प्राप्त होती है तथा मनोबल व व्यक्तित्व ऊपर उठता है। ज्ञानामृत की जितनी तारीफ की जाए उतनी कम है क्योंकि यह पत्रिका भगवान से मिलाती है, कौड़ी से हीरा, रोडपति से करोड़पति, भिखारी से अधिकारी, बेगर से प्रिंस बनाती है। यह सोचकर मैं खुश होता हूँ कि–

कैसे मुझे ज्ञानामृत मिल गई, किस्मत पे आये न यकीन,
तुम हो सुकून, तुम हो जुनून, क्यों पहले न आई तुम।
मैं तो सोचता था कि ऊपर वाले को फुर्सत नहीं,
फिर भी तुम्हें बनाके वो मेरी नज़र में चढ़ गया।
हर पल ज़िन्दगी चमकदार हो गई,
रिम-झिम मलहार हो गई।
मुझे आता नहीं किस्मत पे अपने यकीन,
कैसे मुझको ज्ञानामृत मिल गई।

❖

वरदान बन गये वे शब्द

ब्र.कु.वीरेन्द्र मिश्र, लखनऊ (गोमती नगर)

मेरा अलौकिक जन्म दुबई में हुआ। वर्ष 1997 में दादी जानकी जी का तीन दिनों के लिए दुबई आना हुआ था। मुरली क्लास के बाद दादी जी ने कहा कि जिस किसी को किसी तरह की समस्या हो, कल लिखकर लाना, उसे मधुबन में बाबा के आगे रखेंगे, वह हम सबका बाप है, सब ठीक कर देगा। मैं मधुबन ज़रूर हो आया था लेकिन दादियों या दीदियों – किसी से भी दृष्टि नहीं ले पाता था, मुझे अन्दर ही अन्दर हीनता महसूस होती थी। मैंने अपनी यह कमज़ोरी पत्र में लिखी और संकोचवश अपना नाम नहीं लिखा कि कहीं दादी जी सबके सामने पढ़ न दें। दूसरे दिन क्लास समाप्त हो गयी, मैं इन्तज़ार कर रहा था कि दादी जी अब कहेंगी कि जिस भी भाई या बहन ने बाबा को पत्र लिखा है वह दे मगर ऐसा नहीं हुआ। प्रसाद बँटने ही वाला था, मैंने हिम्मत कर दादी जी को पत्र की याद दिलाई। तब दादी जी ने पूछा, कौन-कौन पत्र लिखकर लाये हैं? मेरे सिवाय और कोई नहीं लिख लाया था (दादी जी ने ना तो पत्र पढ़ा और ना ही पढ़वाया, 'पत्र बाबा के नाम है, वे ही पढ़ेंगे' – ऐसा कह मेरी हिम्मत और बढ़ा दी)। दादी जी ने मुझे वरदान दिया कि अभी से बाबा तुम्हारी (लिखी हुई) मनोकामना पूर्ण करता है और प्यार भरी दृष्टि देकर टोली दी। मैंने उसी वक्त महसूस किया कि पहले मैं आँखों से आँखें नहीं मिला पाता था, आज भरपूर दृष्टि ली। उस अनमोल वरदान ने कितने चमत्कार किये, वे मैं चन्द शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकता। आप सभी से यही अनुरोध कर सकता हूँ कि जो भी कमी-कमज़ोरी है उसे दिल से बाबा के आगे रखें, बाबा अवश्य खत्म कर देंगे। ❖

जीवन की दिशा बदल गई

❊ ब्रह्माकुमारी नरेंद्रकौर छाबड़ा, औरंगाबाद

पाँच वर्ष पुरानी बात है, शाम के वक्त रोजाना की तरह आस्था चैनल पर ओशो का प्रोग्राम देखकर टी.वी.बंद करने ही वाली थी कि अचानक अगले प्रोग्राम की घोषणा हुई 'अवेकनिंग विद ब्रह्माकुमारीज़'। यह मेरे लिए नया नाम था। उत्सुकतावश देखने बैठ गई। पहले ही दिन प्रोग्राम ने इतना प्रभावित किया कि अगले दिन से उसे भी नियमित देखने लगी। महीने भर बाद ही राजयोग सीखने का मन बना लिया और घर के निकटतम केन्द्र पर जाकर वहाँ की निमित्त बहन से मुलाकात की। उन्होंने सात दिन का कोर्स करवाया।

ज्ञान मिलने पर हुआ अपने अज्ञान का अहसास

टी.वी. द्वारा दिए जा रहे ईश्वरीय ज्ञान ने नई दिशा दिखाई। कितनी ही पुरानी मान्यताओं का हम आंखें मूंदे अनुसरण कर रहे हैं। महसूस हुआ कि हम अज्ञान में भटक रहे हैं। उन दिनों घुटने में बहुत दर्द होता था। डॉक्टर ने प्रत्यारोपण की सलाह दी थी लेकिन मैं बहुत डर रही थी। निमित्त ब्रह्माकुमारी बहन से यह बात कही तो वे कहने लगीं, अगर यही एकमात्र उपाय है तो ऑपरेशन करा लीजिए, बाबा तो साथ है ही। थोड़ी हिम्मत बंधी, मुंबई में ऑपरेशन की तारीख तय हो गई। जाते वक्त बहन ने बाबा का चित्र देते हुए कहा, इसे अपने साथ रखना, सब ठीक हो जाएगा। अक्तूबर, 2008 में मेरे घुटने का प्रत्यारोपण सफलतापूर्वक हो गया। आपरेशन थियेटर में जाने से लेकर बेहोशी के इंजेक्शन लगाए जाने तक मैं लगातार बाबा को याद करती रही। दो महीने बाद मैं नियमित कार्य करने लगी।

मधुबन में स्वर्गिक आनन्द

जुलाई, 2009 में मुझे महिला प्रभाग द्वारा आयोजित सेमिनार में भाग लेने का सुअवसर मिला। अपनी एक डॉक्टर सहेली के साथ मैं पहली बार मधुबन (आबू पर्वत) गई। स्टेशन से ही बस द्वारा हमें ज्ञान सरोवर ले जाया गया। वहाँ की व्यवस्था, वातावरण, स्वच्छता, ब्रह्माभोजन, भाई-बहनों, दीदियों व दादियों का प्रेम, सहयोग देखकर स्वर्गिक आनंद का अनुभव हुआ। तीन दिनों में ही ज्ञान का भंडार सुनने को मिला, मन को बड़ी प्रसन्नता हुई। परमात्मा का सही परिचय, सृष्टि-चक्र तथा आत्मा का पूरा

परिचय स्लाइड शो द्वारा दिया गया जिससे सोच की दिशा ही बदल गई। नवम्बर, 2013 में पहली बार बाबा मिलन के लिए मधुबन पहुँची। डायमंड हॉल, प्रकाश स्तम्भ व आसपास का नज़ारा ही आंखों को व मन को सुकून से भर देता है। सवेरे की चाय से लेकर रात के खाने तक की, 25 हजार भाई-बहनों के लिए सुन्दर सुव्यवस्था और स्वच्छता को देख मेरे मुँह से बार-बार यही निकलता रहा, बाबा आपने कमाल कर दिया।

कमियाँ खत्म

पहले किसी कार्य में असफलता मिलने पर दुख और तनाव हो जाता था, अपनी योग्यता पर संदेह होने लगता था। ज्ञान मिलने के बाद अब ऐसा नहीं होता। सफलता मिल गई तो

अच्छा है, नहीं मिली तो उसमें भी कोई राज़ होगा, यही विचार करके सहज रहती हूँ। छोटी-छोटी बातों पर तनाव, अतीत की यादों से परेशानी, क्रोध, शीघ्र ही अपमानित महसूस करना, निर्णय लेने में दुविधा आदि कमियाँ, बाबा की बनने के बाद धीरे-धीरे खत्म हो रही हैं।

सार्थक जीवन बनाने की कला

सेवा की जो भावना ब्रह्माकुमार-कुमारी भाई-बहनों में है वह विश्व के किसी भी कोने में नहीं मिल सकती। नकारात्मक व निरर्थक जीवन को सकारात्मक व सार्थक बनाने की कला सिखाता है यह ईश्वरीय विश्व विद्यालय। बाबा ने एक और बड़ा उपकार किया है। पीस ऑफ माइंड चैनल के द्वारा घर बैठे ही बाबा का पूरा ज्ञान, परमात्मा के महावाक्य (मुरली), दादियों, वरिष्ठ दीदियों, भाइयों के प्रभावशाली भाषण (क्लासेस) सभी कुछ देखने-सुनने को मिल रहे हैं। हम कितने भाग्यशाली हैं जो स्वयं परमात्मा ने लाखों में से हमें चुनकर हमारा हाथ पकड़ा है। सत्य ज्ञान का खज़ाना वे हम पर लुटा रहे हैं और नई सृष्टि की स्थापना के कार्य में हमें सहयोगी बना रहे हैं। ऐसे प्यारे परमपिता परमात्मा की याद आठों पहर हमारे मन और बुद्धि में रहनी चाहिए। ❖

'मैं' क्या हूँ

ब्र.कु. रमेश्वर प्रसाद रावत, आगरा

मैंने मैं का मर्म न जाना, मैं क्या हूँ पहचान न पाया
हाथ, पैर, सिर, पेट, पीठ के, नाक, कान के नाम गिनाए
आँखों से समझाया सब कुछ, मुख से भी कुछ बोल सुनाए
इन अंगों में मैं न मिला तो, सोच-सोच कर मन पछताया
मैंने मैं का मर्म.....

पूछ लिया जब आप कौन हैं, जाति, धर्म, व्यवसाय बखाना
सम्प्रदाय का परिचय देकर, पद अपने का गाया गाना
इसीलिये तो बढ़ी कामना, अपना यश जीवन भर गाया
मैंने मैं का मर्म.....

यह शरीर मैं का मंदिर है, ध्यान लगा कर इसको जानो
जीवन के सुख सभी क्षणिक हैं, दिव्य दृष्टि कर यह पहचानो
पाप कर्म फिर क्यों करते हो, चल पाये कितने दिन काया
मैंने मैं का मर्म.....

आत्म-ज्ञान जिसको होता है, हानि-लाभ सब एक-समाना
राग, द्वेष से रहित हो गया, सत्य रूप जिसने पहचाना
काम-क्रोध का असर नहीं कुछ, ऋषि, मुनियों ने यही बताया
मैंने मैं का मर्म.....

मैं अनंत अविनाशी जग में, मनोकामना मेरी चेरी
यह शरीर तो वस्त्र पुराना, परिवर्तन में करूँ न देरी
मीठे बच्चो मैं को जानो, शिव बाबा ने यह समझाया
मैंने मैं का मर्म है जाना, मैं क्या हूँ अब ही पहचाना

सकारात्मक संकल्प और शक्तिशाली वृत्ति वायुमण्डल को परिवर्तन करने के साधन हैं

पति का परिवर्तन

* ब्रह्माकुमारी सीमा, फाजिल्का (पंजाब)

मेरा जन्म राजस्थान के विजयनगर कस्बे में हुआ। मेरे परिवार में पूजा, पाठ, तीर्थ-यात्रा आदि को बहुत महत्व दिया जाता है। मैं भी हरिद्वार, मथुरा, वृंदावन आदि में भगवान को ढूँढ़ती रही। जब बड़ी हुई तो गली-मोहल्ले की माताओं को प्रेमसागर, कार्तिक महात्मय, श्रीमद्भगवद् गीता आदि सुनाती थी लेकिन ये सब मेरी समझ में ज्यादा नहीं आते थे। गीता के महात्मय की कहानियाँ पढ़कर मैं मन ही मन हँसती थी। भोली माताएँ उनका आनंद लेती और मुझे आशीर्वाद देती कि शादी के बाद तुझे अच्छा घर, परिवार मिले। मेरा सौभाग्य रहा कि शादी ऐसे परिवार में हुई जो साकार ब्रह्मा बाबा की पालना लिए हुए था। युगल के मामा ब्रह्माकुमार हंसराज भाई ने साकार बाबा की पालना ली हुई थी। भक्ति और दुआ का फल था कि मुझे लौकिक के साथ अलौकिक साजन (शिवबाबा) भी मिल गए।

मैं घर में बड़ी बहू हूँ इसलिए सबका मुझ पर विशेष स्नेह रहा। मेरी सास मुझे मुरली सुनाने को कहती तो मैं मना नहीं कर पाती थी लेकिन मुरली पढ़ते-पढ़ते लाइनें छोड़ देती थी। वे कहती थी कि तुम इतना जल्दी मुरली कैसे पढ़ लेती हो, मैं हँस कर टाल देती थी। सन् 1996 में मेरी सास मुझे फाजिल्का के पुराने आश्रम में ले कर गई। वहाँ कोई भी बहन नहीं रहती थी। बहुत पहले मम्मा, दादी चन्द्रमणि, दादी मनोहरइंद्रा व अन्य बड़ी बहनें वहाँ आ चुकी थीं। आश्रम की इमारत जर्जर हो चुकी थी। छत पर पाँव रखने पर वह हिलती थी। खैर, मैं बाबा के कमरे में गई, मुरली पढ़ कर जब योग में बैठी तो मुझे बहुत हलकापन, खुशी तथा आनंद का अनुभव हुआ, ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था। अब मुझे रोज़ खींच होने लगी और मैं रोज़ जाने लगी। केवल चार-पाँच भाई-बहनें ही क्लास करते थे। उन्होंने रविवार को मुरली पढ़ कर सुनाने की सेवा मुझे दे दी।

मेरे युगल सरकारी स्कूल में साइन्स मास्टर हैं, उन्हें मेरा आश्रम जाना पसंद नहीं था। जब भी मैं आश्रम के लिए निकलती, मुझे रोकने की कोशिश करते। मैं उनकी रोक-टोक को प्रभु प्रसाद समझ कर चुप-चाप स्वीकार कर लेती और आश्रम भी चली जाती।

एम.ए.बी.एड. की डिग्री होने के

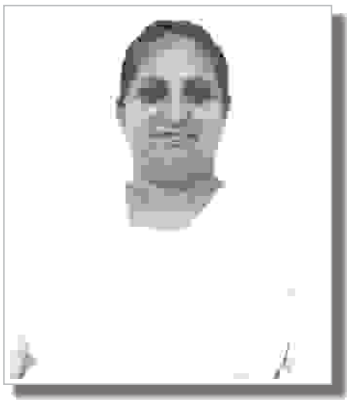

कारण उन्हीं दिनों मुझे एक कॉलेज में लैक्चरर की नौकरी मिल गई। कॉलेज, आश्रम की पिछली गली में है इसलिए कॉलेज के खाली समय में मैं बाबा के पास चली जाती। सन् 2002 में हमने अपना स्कूल खोला जिसे चलाने और बढ़ाने में बाबा की शिक्षाओं ने बड़ी मदद की। सन् 2005 (20 जून) में बाबा का सेवाकेन्द्र नए भवन में प्रारम्भ हुआ। हमने अपने स्कूल में राजयोग शिविर का आयोजन किया जिससे बच्चों तथा अध्यापकों को बहुत लाभ हुआ। शिविर के समापन सत्र के बाद जब मैं घर लौटी तो अचानक पेट में बहुत तेज दर्द हुआ। हॉस्पिटल ले जाया गया तो पता चला कि पेट में कोई नाड़ी फट गई है और खून पेट में इकट्ठा हो गया है जिस कारण तुरंत ऑपरेशन

करना जरूरी है। खून तीन ग्राम ही रह गया था। मेरे बचने की उम्मीद किसी को नहीं थी। लेकिन अनुभव ऐसे हो रहा था जैसे कोई लाइट का घेरा मेरे आस-पास है और मौत को नज़दीक आने से रोक रहा है। डॉक्टरों ने ऑपरेशन किया और सात यूनिट खून चढ़ाया। मुझे ऐसा लगा कि इसी शरीर में मेरा दूसरा जन्म हुआ है। सभी को यह निश्चय हो गया कि किसी चमत्कार से ही इसका जीवन बचा है। हॉस्पिटल से छुट्टी मिलते ही मेरे युगल मुझे सेवाकेन्द्र (बाबा के घर) ले गए और उसी दिन से इन्होंने ईश्वरीय ज्ञान की धारणाओं पर चलने का वायदा कर लिया जिससे इन्हें बहुत फायदा हुआ। इनके स्कूल के बच्चे इन्हें डॉन नंबर एक कहते थे और बहुत डरते थे। अब इन्होंने गुस्सा करना व बच्चों को मारना छोड़ दिया है और बच्चों के चहेते बन गए हैं।

मेरे लौकिक भाई ने 18 जनवरी, 2008 को व मेरी लौकिक माँ ने 18 जनवरी, 2011 को जब देह त्यागा तो मैं दोनों बार आश्रम में ही थी, बाबा ने मुझे बिल्कुल नहीं रोने दिया। पीहर घर में भी ज्ञान-योग का वातावरण निमित्त बहनों द्वारा बनाया गया जिससे बाबा की सेवा के साथ-साथ घर में रोना-धोना भी कम हो गया।

बाबा की शक्ति से तीनों बच्चे इस महायज्ञ में समय-समय पर सेवा देते हैं और युगल स्थानीय आश्रम में अकाउंट्स की सेवा देते हैं। मन कहता है, सब कुछ तो मिल गया है तुझे चाहने के बाद। दस साल बाबा के घर जाने के लिए तड़पी, अब साल में कई बार बाबा के घर जा सकती हूँ। मैंने तो प्रभु से चरणों में जगह माँगी थी, उन्होंने दिल में बसा लिया है। ❖

परमात्म प्रेम में विश्वास और गहरा हो गया

ब्रह्माकुमारी मंजू गुप्ता, वैशाली नगर, जयपुर

ज्ञान में आए मुझे बहुत कम समय हुआ है परन्तु शान्ति का अनुभव बहुत हुआ है। मेरे जीवन में इतने कम समय में अनेक चमत्कार हुए हैं। छोटे-छोटे चमत्कारों से तो मैंने सुख अनुभव किया ही है परन्तु एक बहुत बड़े चमत्कार ने तो परमपिता परमेश्वर शिव बाबा के साथ मेरे प्रेम और विश्वास में अधिक प्रगाढ़ता ला दी है।

मेरे एक रिश्तेदार शारीरिक कमज़ोरी के कारण डॉक्टर की सलाह लेने गए। अनेक प्रकार की जाँच और डॉक्टरों के कहे अनुसार उनकी बीमारी कैंसर थी और वो भी अन्तिम स्टेज पर। डॉक्टर ने अगले दिन ही सर्जरी करने का अपना विचार बताया। अचानक ऐसी गंभीर बीमारी की बात सुनकर हम सब स्तब्ध रह गये। सोच-विचार करके उनका बेटा उन्हें देहली ले गया। इस नाजुक परिस्थिति में मैंने शिव बाबा को याद किया और उनके बेटे को कह दिया कि इन्हें कैंसर नहीं है और बहुत जल्दी ही स्वस्थ होकर ये घर वापस लौट आयेंगे। मुझे नहीं पता कि मैंने ऐसा क्यों कहा, शायद बाबा का संकेत मुझे आशीर्वाद के रूप में मिल गया। अब प्रतिदिन मेरी विशेष शुभभावना उनके स्वस्थ होकर वापस घर लौटने के लिए परमपिता शिव बाबा से होती थी। उनका घर जयपुर में बाबा के घर के सामने ही है। मैं सेवाकेन्द्र में आते-जाते बाबा से शक्तिशाली शुभ वायब्रेशन्स लेकर उनको देती। देहली में कई डॉक्टरों से सम्पर्क करते हुए ''कैंसर नहीं है'' का सर्टिफिकेट लेकर 10 दिन बाद वे जयपुर लौट आए।

यह चमत्कार सिर्फ शिव बाबा ने ही किया है। शिव बाबा ने मेरी शुभभावना स्वीकार करके हमारे परिवार को जीवनदान दिया है। ❖

कहीं हम परवश तो नहीं ?

❊ ब्रह्माकुमार डॉ. अशोक जेठवा, अहमदाबाद (महादेव नगर)

दुनिया में कई देश और टापू ऐसे हैं जहाँ भौगोलिक स्थितियों और मौसम के कारण कई वस्तुओं का मिलना संभव नहीं है। उन्हें उन वस्तुओं का आयात करना पड़ता है, उनके लिए ज्यादा कीमत चुकानी पड़ती है। इस प्रकार वे अन्य देशों पर निर्भर हैं अर्थात् परवश हैं।

कई बार हमें कार्य के लिए बाहर जाना होता है पर अन्य के वाहन के इन्तज़ार में हैं, हमें कोई विशेष कार्य करना है पर अन्य के सहयोग की अपेक्षा में हैं, स्वयं का कोई स्वभाव अच्छा नहीं लगता पर बदलने में स्वयं के अधीन हैं। बाढ़ और खराब मौसम के कारण हम प्रकृति के परवश हो जाते हैं। समय, स्वास्थ्य, संबंध, अज्ञानता से परवश व्यक्ति दबा-दबा रहता है। पर क्या परवशता आत्मा को अच्छी लगती है? नहीं, आत्म-निर्भर व्यक्ति ही स्वयं व समाज के लिए संपत्ति है। आइये, स्वयं में रही हुई परवशता को पहचानकर उसकी जंजीर से बाहर निकलें।

अन्य की शक्ति, सहयोग, सहकार के परवश

अन्य का सहयोग मिले, मदद मिले तभी मैं यह कर सकता/सकती हूँ, यह भी परवशता है। सहयोग लेना बुरी बात नहीं है पर उन पर ही आधारित रहना जैसे अपने आप को अपंग बना देना है। पूरा ही कार्य कोई अन्य करके दे, यह बुद्धिमानी नहीं है। हाँ, जो हमें नहीं आता या कार्य को जल्दी करना है, ऐसे समय पर सहयोग लें, वह बात अलग है। हमारा जीवन किसी व्यक्ति पर आधारित न हो। हर एक की अपनी क्षमता है। हाँ, हम हज़ारों भुजाओं वाले परमात्मा पिता पर आधारित रह सकते हैं। पर वे भी कहते हैं, हिम्मत का एक कदम आप बढ़ाओ, मदद के हज़ार कदम मैं बढ़ाऊँगा। परमात्मा पिता का कहना है कि किसी दूसरे को स्वयं के ऊपर आधारित बनाना भी पाप है। ब्रह्माकुमारी संस्था की विशेषता है, अन्य को आप समान बनाना, अपने पर आधारित नहीं। फलस्वरूप, संस्था के 78 वर्ष पूरे होने पर भी परमपिता परमात्मा शिव का कार्य चलता आया है, चलता रहेगा। देखा गया है कि जहाँ संस्थापक ने अपने साथ रहने वालों, चलने वालों को अपने पर आधारित बना दिया, वहाँ संस्थापक के न होने पर वे असुरक्षित महसूस करते हैं। संस्था अपना कार्य आगे बढ़ाने में कमज़ोर महसूस करती है।

शारीरिक रूप से परवश

आत्मा शरीर को चलाने वाली चैतन्य शक्ति है। शरीर के ठीक न होने पर, साथ न देने पर जो परतन्त्रता महसूस करते हैं वह दर्दनाक है। स्वयं

के शरीर को ठीक रखना और मालिक बन इससे कार्य लेना भी आत्म निर्भरता है।

परतन्त्रता है पाँच विकारों से

आज के समय में हर कोई किसी न किसी बात को लेकर परवश है। कोई मोबाइल, कम्प्यूटर, टी.वी., कार आदि के वश है। कोई किसी आदत जैसे चोरी करना, झूठ बोलना, गप्पे लगाना, समय बरबाद करना, गुस्सा होना, व्यसन करना, चिड़चिड़ापन, रूठ जाना, किनारा करना, ईर्ष्या करना आदि के वश है। कोई फिर स्वयं को मिल रही सुविधा या स्वयं की अपेक्षाओं के वश है। ये सभी परतन्त्रताएँ खतरनाक हैं।

कोई किसी की ग्लानि या कमी का वर्णन किए बिना रह नहीं सकते, कोई लोभवश वस्तु, व्यक्ति, साधन की ओर आकर्षित होकर न करने योग्य कर्म कर लेते हैं। ऐसे परवश व्यक्ति अपनी बुद्धि को जैसे ताला लगा देते, फिर सहमे-सहमे, दबे-दबे से रहते। स्वयं की निर्णय शक्ति का उपयोग नहीं कर पाते। ऐसे व्यक्ति को मदद दे, शक्ति देकर ऊपर उठाना आवश्यक है।

परतन्त्रता को लेकर गैरसमझ

अनुशासन में चलना, सर्व के साथ मिलकर चलना, संगठन के कल्याण को देखते स्वयं को विभिन्न बातों में मोल्ड कर लेना, अन्य की बातों का, विचारों का आदर करना, सुनना, मानना, यह कोई परतन्त्रता नहीं, यह तो बुद्धिमानी है। संगठन में अन्य की राय व मत को सम्मान देकर संगठन के किले को मजबूत करने में सहभागी बनना अधीनता नहीं है।

परिवर्तन और परतन्त्रता

सबसे बड़ी परतन्त्रता व्यक्ति महसूस करता है स्वयं में परिवर्तन लाने में। वह स्वयं को शक्तिहीन, खाली, नाउम्मीद महसूस करता है। परिवर्तन न हो सकने के बहानों की लंबी सूची है। महात्मा गांधीजी ने कहा है, Be the Change that you wish to see in the world. अधीनता को तोड़ने के लिए हमें आत्मबल चाहिए। पराधीनता के कारण कोई न कोई भूल होती है। अंदर से नहीं करना चाहते हैं पर संस्कारवश कर लेते, फिर पश्चाताप होता। फिर मजबूरी से परिवर्तन करना पड़ता है।

पर-निर्भरता से
स्व-निर्भरता की ओर

आजकल शारीरिक, मानसिक रूप से अस्वस्थ व्यक्तियों को भी विभिन्न कार्य सिखाते हैं ताकि वे आत्मनिर्भर बन रोज़ का खर्च चला सकें। परमात्मा से योग लगाकर आत्मिक शक्ति को उजागर करके हम पराधीनता रूपी ज़ंजीर को तोड़ सकते हैं। परमात्मा मजबूर नहीं, मज़बूत बनाते हैं। एक पिता अपने बच्चे को कभी किसी परिस्थिति में हारता हुआ देखना नहीं चाहता। परमात्मा सर्व आत्माओं के पिता होने के नाते हमें आत्मनिर्भर बनाते हैं जो आत्मा की भरपूरता है। वे सागर हैं गुण, शक्तियों के। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के युवा प्रभाग ने वर्ष 2006 में 11,393 युवाओं का सर्वे किया जिनमें से 1187 युवा शराब पीते थे, एक साल के राजयोग के अभ्यास से 1182 युवाओं ने शराब छोड़ी। राजयोग के अभ्यास से व्यक्ति पराधीनता को छोड़ खुले आकाश में उड़ सकता है। आपको भी ऐसी उड़ान भरने का सादर निमंत्रण है।

❖

आवश्यकता है

आर्मी, एअर फोर्स, नेवी या बी.एस.एफ.से
अवकाश प्राप्त जे.सी. ओज. की ग्लोबल हॉस्पिटल, माउण्ट आबू में सुरक्षा विभाग और ट्रान्सपोर्ट विभाग में सेवा हेतु आवश्यकता है।
संपर्क करें : 9413375360
बायोडाटा भेजने के लिए ईमेल – ghrchrd@ymail.com

खुदा मुझ पर फिदा

* ब्रह्माकुमारी लाज, सन्त नगर, दिल्ली

मेरा जन्म सन् 1952 में दिल्ली में एक धार्मिक परिवार में हुआ। बचपन से ही पाठ-पूजा, भक्ति में तल्लीनता थी। ढाई वर्ष की उम्र से कथा करने और प्रसाद बांटकर खाने की भावना थी। चार वर्ष की आयु से उपवास रखना प्रारंभ कर दिया था। भक्ति-लीला के खेल ही बचपन से खेलती थी।

ज्ञान का जन्म

मुझे मेरी मौसी ने गोद लिया था। उन दिनों साकार बाबा दिल्ली में आये हुए थे। मेरे पड़ोस में एक माता कमलानगर, दिल्ली में ब्रह्माकुमारीज़ की नियमित विद्यार्थी थी। उसने मेरी मम्मी और मौसी दोनों को बाबा से मिलने का निमन्त्रण दिया परन्तु मेरी भक्ति की निष्ठा देख कर डर के मारे कि कहीं यह भी वहाँ ना चली जाए उन्होंने निमन्त्रण स्वीकार नहीं किया। अगले दिन उस पड़ोसन ने मुझे ज्ञान के ढाई अक्षर 'मैं आत्मा हूँ.... मूलवतन से आई हूँ.... मूलवतन जाना है' सुनाये। मेरे लिए वही ढाई अक्षर पंडित बनाने वाले सिद्ध हुए।

धारणाओं की शुरूआत

जिस समय मालूम पड़ा कि प्याज-लहसुन का प्रयोग सात्विक भोजन में नहीं होना चाहिए तो मैंने भी इनका सेवन करना छोड़ दिया। माँ ने खूब पिटाई की, फिर मैंने खा लिए परन्तु पिट कर रोते-रोते सो गई। रात को स्वप्न में मम्मा-बाबा आये। यह सन् 1966 की बात है तब मम्मा अव्यक्त हो चुकी थी। बाबा ने कहा, बच्ची तू हार गई? मैंने कहा, नहीं बाबा, आप साथ हो तो हार कैसे हो सकती है और फिर नियमों की धारणा पूर्ण रीति से शुरू हो गई।

छिप-छिप किया मिलन

ज्ञान प्राप्त होने के बाद सात वर्षों तक घरवालों से छिप-छिप कर नियमित सेवाकेन्द्र जाती रही। मुझे ज्ञान सुनने जाने की तड़प ऐसी उठती थी जैसे जल के लिए मछली तड़पती है। जब सेवाकेन्द्र पर गुलजार दादी जी और चक्रधारी दीदी जी कहती थी कि यह समय बहनों के आराम का होता है तब जगदीश भाई साहब मुझे समय देते थे।

एक नज़र में जीवन का निर्णय

पहली बार जब गुलजार दादी जी को देखा तो मन ही मन निर्णय कर लिया कि जीवन जीना है तो इसी तरह जीना है। माता-पिता ने सिर्फ आठवीं

कक्षा तक पढ़ाया। कहते थे, ज्यादा पढ़-लिखकर पांव पर खड़ी हो जाएगी तो हमारा कहना नहीं मानेगी। फिर भी मैंने सिलाई का डिप्लोमा प्राप्त किया।

अज्ञात-वास पूरा हुआ

मैं सिन्धी परिवार से हूँ इसलिए गुरुद्वारे में जाना होता था। एक दिन मैंने सफेद कपड़े पर पीली और लाल पैंसिल ले कर (बाबा का) चित्र बनाया परन्तु मम्मी ने पीली पैंसिल छिपा दी तो मैंने हल्दी की सहायता ली और उस चित्र को पूरा कर ट्रंक में संभाल कर रख दिया। जब माँ की नज़र उस पर पड़ी तो सज़ा मिली।

एक दिन मन में आया, आखिर छिप-छिप कर सेवाकेन्द्र कब तक जाती रहूँगी? एक सुबह सेन्टर जाने लगी तो माँ ने पूछा, कहाँ जा रही हो? ज़ोर से मेरी आवाज़ निकली,

सेवाकेन्द्र जा रही हूँ। वापस घर आई तो माँ ने कुछ भी नहीं कहा। उस दिन से रोज़ घर पर बता कर सेवाकेन्द्र जाने लगी।

सेवा करनी है चाहे कैसे भी हो

इसी बीच शादी का बंधन आया परन्तु भगवान से लगी लगन की अग्नि ने मुझे भगवान का बनाये रखा। मामा जी ने कहा, खुद कमाओ, खुद खाओ। मैंने कहा, मंजूर है। सन् 1973 में मधुबन जाने का समय आया, वहाँ बाबा से मिले। बाबा को बंधन के बारे में सुनाया और कहा, बाबा, सुबह क्लास करने तो जाती हूँ परन्तु दुबारा सेवा करने नहीं आ पाती क्योंकि रोका जाता है। बाबा ने बहुत स्नेह दिया और कहा, सेवा करनी है चाहे कैसे भी हो। मधुबन से आई तो सेवाकेन्द्र पर सुबह-सुबह सेवा करने लगी। साथ-साथ एक्सपोर्ट फैक्टरी में नौकरी भी करने लगी। बचपन से शरीर कमज़ोर था, बीमारी कोई ना कोई लगी रहती थी। मैं दीदी और भाई साहब से कहती थी कि मुझे सेवाकेन्द्र पर रख लो। दीदी ने बाबा से बात की। मैंने बाबा से पूछा, मैं बीमार रहती हूँ तो क्या सेवाकेन्द्र पर नहीं रह सकती? बाबा ने दीदी को कहा, बच्ची का ध्यान रखना। ये शब्द तीन बार बाबा ने कहे। मुझे नाज़ है कि मेरे जीवन का समर्पण स्वयं भगवान के वरदानी बोल के द्वारा हुआ। इस प्रकार जीवन-यात्रा में मैंने जो संकल्प किए, बाबा ने एक सच्चे जीवन-साथी के रूप में उन्हें पूरा किया। इन अनुभवों को पाकर मेरा दिल यही कहता है – खुदा मुझ पर फिदा। मुज्जफरनगर में 10 वर्ष सेवाएँ की। पुनः दिल्ली आना हुआ। वर्तमान समय दिल्ली, सन्त नगर में ईश्वरीय सेवाएँ दे रही हूँ।

❖

नारी का सम्मान

ब्र.कु.हरी सिंह, राजौरी गार्डन, दिल्ली

नारी ने तुम्हें जन्म दिया, नारी संग ऊँचा नाता है,
बेटी, पत्नी, बहना और नारी ही तुम्हारी माता है।
धुरी कुटुम्ब की नारी है, नारी से हो कल्याण,
नारी का सम्मान करो भाई, नारी का सम्मान।।

पराक्रमी योद्धाओं को भी माता ने ही ज्ञान दिया,
सन्तों और महन्तों को भी उसने आत्म-ज्ञान दिया।
भारत का इतिहास पढ़ो, मिल जायेंगे सब प्रमाण,
नारी का सम्मान करो भाई, नारी का सम्मान।।

शंकर से पहले गौरी, कृष्ण से पहले राधा है,
नारायण से पहले लक्ष्मी, राम से पहले सीता है।
देवों से पहले होता है देवियों का आह्वान,
नारी का सम्मान करो भाई, नारी का सम्मान।।

ज्ञान की देवी सरस्वती, तो धन की लक्ष्मी देवी है,
काली करे काल से रक्षा, शक्ति की दुर्गा देवी है।
शिव की इन सब शक्तियों को ध्यान से लो पहचान,
नारी का सम्मान करो भाई, नारी का सम्मान।।

ईश्वरीय परिवार हमारा प्रशासिका इसकी नारी है,
पिच्चासी सौ सेवाकेन्द्रों की दादी ही प्रभारी है।
बाँट रही ब्रह्माकुमारियाँ सच्चा गीता-ज्ञान,
नारी का सम्मान करो भाई, नारी का सम्मान।।

कान खोलकर सुन ले मानव, नारी को जो सताएगा,
जीते जी दुख पाएगा और अन्त दुर्गति पाएगा।
वस्तु नहीं है नारी कोई, ना ही कोई सामान,
नारी का सम्मान करो भाई, नारी का सम्मान।।

शान्ति दूत हम भाई-बहनें तुम्हें जगाने आये हैं,
परमपिता आ गए धरा पर, ज्ञान सुनाने आये हैं।
नारी बिना बन नहीं सकेगा भारत स्वर्ग समान,
नारी का सम्मान करो भाई, नारी का सम्मान।।

बच्चों की दुनिया

❊ ब्रह्माकुमारी शीला, एलगिन रोड, कोलकाता

(नेपथ्य में आवाज आ रही है)

हम बच्चे हैं, तो क्या हुआ? हममें भी भावनाएँ भरी हैं। हम उन्हें व्यक्त करना चाहते हैं। हमें बहुत कुछ सुनाने को रहता है, कोई सुनके तो देखे। किसे सुनाएँ? कोई हमारी बात समझ नहीं पाता और अपनी सुनाने लगता है। माता-पिता को व्यस्त और परेशान देखता हूँ तो रुक जाता हूँ। पता नहीं उन्हें मेरी बातें अच्छी लगेंगी कि नहीं, कहीं वे क्रोधित हो गए तो? दुखी हो गए तो? इस तरह के विचार अन्दर चलने लगते हैं। इसलिए हम अपनी बातें दिल में ही रख लेते हैं। आज हम ने एक योजना बनाई है कि हम सब बच्चे मिलकर अपनी बात परमात्मा को सुनाएँगे। परमात्मा शिव बाबा को सखा बनाकर, अपने मन की बातें कहेंगे। बाबा आनन्दित होंगे हमारी बातें सुनकर। बाबा ''हरी'' *(जल्दबाजी)* में नहीं हैं और बाबा के पास ''वरी'' *(चिंता)* नहीं है।

यहाँ खुला मंच है। कोई बन्धन नहीं है। हम बच्चे निस्संकोच बातें करेंगे। एक-एक बच्चा मंच पर आएगा, अपना नाम बताएगा, अपने मन की बात परमात्मा को बताएगा। एक से अधिक बातें भी बता सकता है, इसकी छूट है पर ध्यान रखना है अपने साथियों का। उन्हें भी परमात्मा पिता से कुछ कहना है।

(पर्दा हटता है, एक बड़े-से कमरे में सात बच्चे कुर्सियों पर बैठे हैं। सामने एक टेबल है। सुबह के समय बच्चे तरोताजा हैं। रविवार की स्कूल की छुट्टी है। बच्चों ने अपना नाम मनपसन्द साज पर रखा है। वस्तुतः वे हैं भी साज ही, बस, उन्हें छेड़ना सही ढंग से आना चाहिए। उनके नाम हैं - 1.शहनाई 2.बैन्जो 3.सितार

4.गिटार 5.तबला 6.सरोद 7.वायलीन। सबसे पहले शहनाई अपनी बात कहने के लिए उठती है)

शहनाई – बाबा, मैंने पूछा, ''नानी इतने सारे देवी-देवताएँ क्यों हैं? एक होते तो कितना अच्छा होता।'' मेरी बात सुनकर नानी आश्चर्यचकित है, उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया मेरे प्रश्न का पर उनके साथ एक और महिला बैठी हैं। उन्हें मेरा प्रश्न करना अच्छा नहीं लगा। वो मेरे पीछे पड़ गई और रोष में बोली, ''भगवान के लिए ऐसे बोलते हैं क्या? ऐसे नहीं बोलना चाहिए, तुमसे भूल हुई है, चलो देवी-देवताओं से माफी मांगो।'' बाबा, मुझे माफी मांगनी पड़ी पर पता नहीं पड़ा कि मेरी गलती क्या थी?

''हमारे गाँव में तो सूरज चाचू इधर निकलते हैं, आपके दिल्ली में उधर क्यों?'' मैंने जैसे ही यह कहा, वहाँ बैठे सभी हंसने लगे। मैंने कुछ गलत पूछ लिया क्या? मन में प्रश्न उठा। इतने में चाची आगे आई, मेरे को दुलारा और प्यार से कहा, ''बेटे, सूरज चाचू तो पूर्व से ही निकलते हैं पर घर की दिशा अलग हो सकती है।'' मेरी

समझ में बात आ गई और लगा, चाची कितनी बुद्धिमान हैं।

(ओम शान्ति कहकर शहनाई ने अपनी बात पूरी की, अब बैन्जो की बारी है)

बैन्जो – बाबा, मेरी माँ बहुत अच्छी हैं, दादी भी बहुत अच्छी हैं। दोनों मुझे बहुत प्यार करती हैं। मैं भी दोनों को बहुत प्यार करता हूँ पर पता नहीं क्या बात है, माँ और दादी दोनों एक-दूसरे से खिंचे-खिंचे रहते हैं। वो तो इतने बड़े हैं, क्यों नहीं समझ पाते कि इससे मुझे दुख होता है। मुझे कितनी अच्छी-अच्छी बातें सिखाते हैं, फिर दोनों प्यार से क्यों नहीं रहते? मैं उन दोनों में एक-दूसरे के लिए प्रेम, सम्मान और सद्भावना देखना चाहता हूँ।

बाबा, पंडित जी मेरे घर में आकर 'सत्यनारायण' की पूजा कराते हैं। कल मैंने उन्हें देखा कि पान की दुकान पर खड़े होकर बीड़ी पी रहे थे। मैं तो हक्का-बक्का हूँ। घर पर आकर कितना नियम-निष्ठा दिखाते हैं और खुद!

बाबा, आपको मालूम है, मेरे मामा जी 'स्पॉटलैन्डिंग' में भारत में सर्वप्रथम आये हैं। इसके लिए उन्हें प्रधानमंत्री से अवार्ड भी मिला है। उन्हें एक अच्छी एयरलाइन्स में नौकरी भी मिल गई है पर मेरी नानी एवं घर के अन्य वरिष्ठ सदस्यों ने उन्हें पायलट की नौकरी में जाने से मना कर दिया है। उनका कहना है कि उड़ान की नौकरी खतरनाक होती है। वे ऐसा क्यों सोचते हैं? मुझे तो हवाई जहाज में घर जैसी सुरक्षा लगती है। फिर उन्होंने मामा का दिल क्यों तोड़ दिया? मैंने कल रात मामा जी को अकेले में रोते देखा, बाबा बहुत बुरा लगा। ओम शान्ति बाबा।

(ओम शान्ति कहकर बैन्जो ने अपनी बात पूरी की, अब सितार की बारी है)

सितार – बाबा, सुबह-सुबह उठना मुझे अच्छा नहीं लगता। देर तक सोना अच्छा लगता है पर पापा, जो स्वयं साढ़े तीन बजे भोर में उठते हैं, मुझे पांच बजे उठा देते हैं। पापा बहुत प्यार से उठाते हैं पर मुझे अच्छा नहीं लगता है।

बाबा, पहले दादी बहुत देर से उठती थी। अभी तो बहुत जल्दी उठ जाती हैं और ब्रह्माकुमारी सेन्टर पर जाती हैं। मैं जब स्कूल जाने के लिए सुबह में उठता हूँ तो उससे पहले दादी सेन्टर जा चुकी होती हैं। वे कभी-कभी मुझे मुरली सुनाती हैं, तो मुझे बहुत अच्छा लगता है और नींद आ जाती है पर पता नहीं क्यों आज मम्मी ने कहा कि तुम मुरली मत सुनो, वह तेरे लिए अच्छा नहीं है। मम्मी ने ऐसा क्यों कहा बाबा? मैं द्वंद्व में हूँ कि क्या करूँ? यह बात दादी को कैसे कहूँ?

बाबा, आज मम्मी को झूठ बोलते सुना तो परेशान हूँ। क्या बड़े भी झूठ बोलते हैं? वे किसी आन्टी से फोन पर बात कर रही थी। कह रही थी कि आज तबीयत ठीक नहीं है, थोड़ा रेस्ट में हूँ पर बाबा मम्मी तो ठीक हैं और गाड़ी लेकर कहीं जाने वाली हैं। उन्होंने ऐसा क्यों कहा? मुझे अच्छा नहीं लगा।

(ओम शान्ति कहकर सितार ने अपनी बात पूरी की, अब गिटार की बारी है)

गिटार – बाबा, हम दोनों भाई एक ही विद्यालय में पढ़ते हैं, मैं बड़ा हूँ, अपने भाई को सदैव नीचा दिखाने की कोशिश करता हूँ, इससे मुझे अच्छा लगता है। वह भी पढ़ाई में अच्छा है पर लोग मेरी तारीफ ज्यादा करते हैं। उसकी कोई पूछ नहीं है, मेरे माता-पिता भी मेरे ऊपर ज्यादा ध्यान देते हैं, यह मुझे और अच्छा लगता है।

बाबा, आज मैंने अपने घर के सेवक की जेब से बीस रुपये चुरा लिये और उनसे गोलगप्पे खा लिये। सेवक अपने रुपयों की तलाश कर रहा है, सबसे पूछ रहा है। मेरे ऊपर तो उसका सन्देह भी नहीं जाएगा। मेरे को बहुत बुरा लग रहा है। सॉरी बाबा, अब कभी भी मैं चोरी नहीं

करूँगा।

बाबा, जब मैं स्कूल से वापस घर जाता हूँ तो घर के सेवक मेरे लिए खाना परोसते हैं। मेरी माँ के यह आराम का समय होता है। मेरी इच्छा होती है, मेरी माँ गरम-गरम फुलका मेरी थाली में रखती। सुना है, माँ के हाथ का खाना बड़ा स्वादिष्ट होता है पर ऐसा मेरे भाग्य में क्यों नहीं है बाबा।

(ओम शान्ति कहकर गिटार ने अपनी बात पूरी की, अब तबले की बारी है)

तबला – बाबा, मैं होस्टल में रहकर पढ़ाई करता हूँ। मेरे माता-पिता जहाँ रहते हैं वहाँ कोई अच्छा स्कूल नहीं है इसलिए उन्हें मुझे बाहर भेजना पड़ा। मुझे उनसे कोई शिकायत नहीं है क्योंकि उनके सामने भी लाचारी है। पर बाबा मुझे होस्टल में रहना अच्छा नहीं लगता। कभी-कभी मन में आता है काश! उनकी नौकरी बड़े शहर में होती तो मुझे होस्टल में नहीं जाना पड़ता।

बाबा, माँ-पापा का झगड़ा करना एकदम से अच्छा नहीं लगता है। मैं उन्हें कहना चाहता हूँ कि आप दोनों हँसते हुए अच्छे लगते हो पर यह बात उन्हें कब कहूँ? कैसे कहूँ? प्यारे बाबा, आप गाइड करना। मैं तो फिर भी आपका बच्चा ही हूँ ना!

(ओम शान्ति कहकर तबले ने अपनी बात पूरी की, अब सरोद की बारी है)

सरोद – बाबा, मेरी नन्ही-सी बहन बहुत प्यारी है। मैं उसे देख बहुत खुश हूँ पर घर के लोग खुश नहीं हैं। मेरी नानी और दादी खुश नहीं हैं क्योंकि फिर से बेटी हुई है। पर वो भी तो महिला हैं, कभी किसी की बेटी थीं न! अभी उन्हें इच्छा रहती है कि सभी उन्हें आदर दें, फिर वो क्यों फूल-सी मेरी बहन को प्यार और सम्मान नहीं दे पाते? भयभीत.हूँ। कहाँ चला गया मेरा भाई? लोग कहते हैं कि वह भगवान के पास चला गया। भगवान के पास क्यों चले जाते हैं बच्चे? मुझे उसकी बहुत याद आ रही है। मन करता है फूट-फूट कर रोऊँ।

(ओम शान्ति कहकर गिटार ने अपनी बात पूरी की, अब वायलीन की बारी है)

वायलीन – बाबा, ''इस बच्चे की ड्रेस अच्छी नहीं है'' या ''इसकी नाक कितनी चपटी है'' या ''यह कितना मोटा है'' – इस तरह के आक्षेप लोग अक्सर करते हैं, इससे मुझे बहुत दुख होता है। मैं जैसा हूँ, उसी रूप में लोग मुझे प्यार क्यों नहीं कर पाते? बाबा, आपके ज्ञान ने मेरे में बहुत परिवर्तन कर दिया है। बाबा, ''मैं शरीर नहीं बल्कि परम शक्तिशाली आत्मा हूँ'' इस ज्ञान से मुझमें अद्भुत परिवर्तन आया है। मैं आपका सबसे प्यारा बच्चा हूँ।

बाबा, आज मैं बहुत दुखी हूँ। कारण है, मैं अब तक सोचती थी कि लोग एक आँख से ही देखते हैं, तो मुझे तसल्ली थी पर आज मुझे पता चल गया कि वैसा सोचना मेरी भूल थी। दरअसल लोग दोनों आँखों से देखते हैं। यह जानकर मैं बहुत डर गई हूँ। मुझे आज पता चला है कि मेरी दाहिनी आँख में भी रोशनी होनी चाहिए थी। उसमें नहीं है तो यह सामान्य बात नहीं है। क्या करूँ? क्या न करूँ? कुछ समझ में नहीं आ रहा है, बाबा, आपसे कह दिया सो कह दिया पर किसी और को मैं यह बात बता नहीं पाऊँगी, अपने माता-पिता को भी नहीं क्योंकि यह जानकर उन्हें बहुत दुख होगा और मैं उन्हें दुखी नहीं करना चाहती।

(पर्दा गिरता है, नेपथ्य में अलार्म बजने की आवाज आती है फिर बन्द हो जाती है, एक नारी स्वर गूंजता है)

प्रात: 3.30 बजे मेरे उठने का समय हो गया है। गुड मॉर्निंग बाबा, बहुत-बहुत धन्यवाद कि मैं अच्छी तरह सोई। पर इतनी देर से मैं सपने देख रही थी। यहाँ तो कोई बच्चा नहीं है। वाह रे मेरा भाग्य! जो बच्चों को निस्संकोच होकर बाबा से बातें करते देखा और सुना।

समाप्त

सफलता का मंत्र - सर्व का सहयोग

❊ ब्रह्माकुमार ललित, शान्तिवन

सफलता प्राप्ति के लिये अनेक आत्माओं के प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष सहयोग की जरूरत रहती है। कार्य की शुरूआत भले अकेले ने की हो परन्तु उसे सर्व के सहयोग से सहजता से सम्पन्न किया जा सकता है। स्वयं सर्वशक्तिवान निराकार परमात्मा पिता शिवबाबा भी साकार ब्रह्मा बाबा एवं ब्रह्माकुमारों-ब्रह्माकुमारियों का सहयोग लेकर यह विश्व परिवर्तन का कार्य सम्पन्न कर रहे हैं। इसीलिये यादगार चित्रों में भगवान की हज़ारों भुजाएँ दिखाई जाती हैं।

अव्यक्त बापदादा की पधरामणी दादी हृदयमोहिनी जी (गुलज़ार दादी जी) के तन में जब 30 नवम्बर, 2005 के दिन हुई तो उन्होंने युवा प्रभाग के प्रति महावाक्य उच्चारण किये कि जिन युवाओं का राजयोग द्वारा जीवन परिवर्तन हुआ हो उनके अनुभवों की एक पुस्तक बनाई जाए जो सरकार को भी दिखायी जा सके। दूसरे दिन शान्तिवन में युवा प्रभाग की मीटिंग हुई जिसमें निश्चित किया गया कि यह पुस्तक छपवाकर 25 फरवरी, 2006 को प्यारे बापदादा के कमल हस्तों से विमोचन करायेंगे। मैं उस समय युवा प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजन कार्यालय (अहमदाबाद, महादेव नगर सेवाकेन्द्र) पर अपनी सेवाएं दे रहा था। युवा प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका आदरणीया ब्र.कु.चन्द्रिका बहन जी ने शान्तिवन से अहमदाबाद आते ही वहाँ के युवा भाई-बहनों की मीटिंग की और पूछा कि इस सेवा को पूरा करने के लिये कौन जवाबदारी लेने को तैयार है? मैंने सहज रीति से अपना हाथ ऊंचा किया और वह जवाबदारी सर्व सम्मति से मुझे सौंपी गई।

इस पुस्तक के बारे में मुझे कुछ भी पता नहीं था, शून्य से शुरूआत करनी थी। मुझे सिर्फ इतना विश्वास था कि भगवान ने कहा है माना हुआ ही पड़ा है, बड़ों का आशीर्वाद है तो कार्य समय पर सम्पन्न हो ही जाएगा। जब पुस्तक बनाने की प्रक्रिया शुरू हुई तब आश्चर्यजनक मदद मिलती गई। भारतभर के सभी सेवास्थानों से लगभग 12000-15000 युवाओं से जीवन परिवर्तन सम्बन्धी फॉर्म्स मंगवाने की प्रक्रिया शुरू की गई। दो भाई, जो अभी कम्प्यूटर की पढ़ाई पढ़ रहे थे, उन्होंने एक सोफ्टवेयर बनाने की ज़िम्मेदारी उठाई जिसमें उन फॉर्म्स का डाटा डाला गया ताकि अलग-अलग रिपोर्ट्स निकाली जा सकें।

सेवाकेन्द्र पर आने वाले भाई-बहनों ने अपने-अपने घरों से कम्प्यूटर लाकर सेवाकेन्द्र पर रख दिये। इस प्रकार 18 कम्प्यूटर्स पर सुबह 2 बजे से रात्रि 10 बजे तक अविरत गति से यह सेवा चलने लगी। पुस्तक की डिजाइन एवं सामग्री के लिये कुछ विशेषज्ञ अपनी सेवाएं देने को तैयार हो गये। जब पुस्तक (स्वर्णिम प्रभात) प्रिन्ट होकर 25 फरवरी, 2006 को अव्यक्त बापदादा के हस्तकमलों में पहुंची तब हम सभी को अत्यन्त खुशी का अनुभव हुआ। करनकरावनहार बापदादा ने भी उसे सराहा। आज जब वे दिन याद करते हैं तो एक सुहावना सपना ही लगता है क्योंकि इतना बड़ा प्रोजेक्ट इतने कम समय में और बिना विशेष अनुभवी सेवासाथियों के सम्पन्न हो गया।

दूसरों से सहयोग प्राप्त करने का आधार है निरन्तर, नि:स्वार्थ रूप से सभी को सहयोग देते रहना, फिर सहयोग मांगने की ज़रूरत नहीं पड़ती, वह स्वत: दूसरों से मिलता रहता है, वह भी खुशी और प्रेम के साथ। दूसरों के विचारों का सहयोग

(शेष..पृष्ठ 17 पर)

पानी की सीख

❊ ब्रह्माकुमारी राजरानी, इलाहाबाद

प्रत्येक प्राणी का पानी के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है। महर्षि पतन्जलि ने तो प्राणी के लिए पानी की अनिवार्यता देखकर प्राणी की परिभाषा पानी के आधार पर ही की है। जो बिना पानी के पीड़ित होने लगता है वह प्राणी है। पानी के अति विशिष्ट गुणों को देख इसे जीवन का आधार ही नहीं अपितु अपना आदर्श गुरु भी मान लें तो हम सब का कल्याण हो जाएगा। प्रस्तुत हैं पानी के कुछ विशिष्ट गुण –

शीतलता – कितना भी उबाला जाए फिर भी पानी अपने मूल शीतल स्वभाव की ओर ही लौट आता है। मनुष्य आत्मा भी पानी की तरह मूल रूप में शान्त स्वरूप है। वह कितनी भी क्रोध से आक्रान्त हो जाए पुन: अपने शान्त स्वरूप की ओर लौट आती है। जैसे पानी को उबालने के लिए बाहर से गर्मी दी जाती है, उसके पास अपनी गर्मी नहीं है, इसी प्रकार मानव आत्मा के पास अपनी गर्मी अर्थात् क्रोध, हिंसा, झूठ, कपट नहीं हैं। ये विकार स्वयं की विस्मृति होने पर, आवरण की तरह छाकर उसके मूल गुणों को ढक लेते हैं। अत: जब भी पानी के सम्पर्क में आएं, याद करें, मैं पानी की तरह शीतल और शान्त स्वरूप आत्मा हूँ।

गतिशीलता – पानी निरन्तर गतिशील रहता है, मार्ग में चट्टान आ जाये तो भी अगल-बगल से आगे बढ़ने का रास्ता खोज लेता है। मार्ग को रोकने वाली शिला एक दिन बालू के कण में बदल जाती है। हम भी पानी की तरह निरन्तर बहने वाले बनें। कहा जाता है, पानी बहता भला, योगी रमता भला। जैसे खड़े पानी में काई, कीड़े, सड़ान्ध पैदा हो जाती है इसी प्रकार स्थान और व्यक्तियों के मोह के संकुचित गड्ढे में पड़े व्यक्ति में भी कई दुर्गुण पैदा हो जाते हैं। जैसे पानी सबकी प्यास बुझाता, धरती को हरा-भरा करता चलता जाता है, उसी प्रकार हम भी सबको सुख देते हुए निरन्तर गतिशील रहें।

पारदर्शिता – महात्मा बुद्ध ने कहा है, 'मानव जीवन पानी की तरह पारदर्शक होना चाहिए।' पानी में कोई दुराव-छिपाव या पर्दा नहीं, जैसा दिखता है, भीतर भी वैसा ही है। पानी की तरह ही हमें भी अन्दर-बाहर एक जैसा रहना है। जीवन खुली किताब की तरह हो, कोई भी, कभी भी, कहीं से भी पढ़ ले।

साम्यता का भाव – पानी के भरे बर्तन में से, चाहे नीचे लगी टूटी से या ऊपर से ढक्कन खोलकर, कहीं से भी पानी निकालें, पानी अपने तल को समतल रखता है। पानी की निकासी होने पर उसकी कमी पूरे तल में समान रूप से बँट जाती है। यदि बर्तन में कहीं से पानी भरा जाता है तो भी उसका समान वितरण तुरन्त हो जाता है। पानी का यह गुण हम भी अपने में धारण करें। जो लाभ हो, प्राप्ति हो उसे सबका लाभ बना दें, सबसे बाँट लें। प्राप्तियों का संग्रह ना करें। जो इस प्रकार बाँट कर चलता है उसको कमी का सामना कभी नहीं करना पड़ता।

हल्का रहना – पानी हल्के को सिर पर रखकर ले चलता है। भारी को गिराने में परहेज नहीं करता है। हम भी हल्के रहेंगे तो प्यारे बाबा पलकों पर बैठाकर ले उड़ेंगे। भारी रहेंगे तो बाबा की देख-रेख से वंचित रह जाएंगे। अत: सदा हल्के रहें और सदा उड़ते रहें।

समायोजन – पानी को जिस बर्तन में डालो या जिस भी स्थान पर रखो वैसा आकार धारण कर लेता है क्योंकि उसमें लचीलापन बहुत ज्यादा है। हमें भी समय और परिस्थिति के अनुसार ढलने की कला आनी चाहिए तभी हम सफल हो सकते हैं। इस प्रकार पानी के गुणों को ग्रहण कर हम और अधिक गुणवान बन जाएंगे। ❖

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन -307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। संयुक्त सम्पादिका - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
E-mail : omshantipress@bkivv.org Ph. No. : (02974) - 228125 gyanamritpatrika@bkivv.org